

गङ्गा

मैथिली क सर्वोत्तम मासिक



Vaidehi
25 nP.

एक प्रति
चार
आना

फरवरी १९५८
२५ नवका पैसा

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'

श्रीसुधांशु 'शेखर'
चौधरी

प्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति २५

विशेषांक ५०

वार्षिक ३)

आजीवन ५१)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

द्वारा दरभंगा प्रेस

कम्पनी (प्रा०) लि०

दरभंगामें मुद्रित

एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान

वैदेही समिति,

लालबाग, दरभंगा

मुख-चित्र : मिथिलाक प्रसिद्ध विद्वान्-प्रिन्सिपल श्रीत्रि लोकनाथमिश्र, जनिक मैथिली-साहित्य-सेवा अवर्णनीय अछि । आब दरभंगास्थ मिथिला संस्कृत विद्यापीठ मे विशिष्ट विद्वानक पदकेँ अलंकृत करताह ।

निवेदन

(१) सखेद सूचित करै पड़ैछ जे कार्यालयमे कार्यकर्तागणक परिवर्तनक कारणेँ ग्राहककेँ अनेक असुविधा भेल छन्हि ताहि हेतु क्षमा - प्रार्थी छी । आव सभक व्यवस्था भै रहल अछि । जनिका तथापि जे किछु असन्तोष रहन्हि से सूचित करबि ; अप्रसन्न नहि होथि । हमरा सभ सतत सेवा करै लेल प्रयत्न छी ।

(२) जाहि ग्राहक महोदयकेँ जाहि मासक अंक नहि प्राप्त होइन्ह से ओही मासक २० तारीख धरि अपन डिलेभरी पोस्ट - आफिससँ प्रमाणित आवेदन-पत्रकेँ कार्यालयमे समुचित कार्यवाहीक हेतु पठा देथि ।

— मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

कथा-पिहानी

गुलाबी गप्प

सत्तमाय

अम

मिथिलाक नारा

प्रो० श्रीहरिमोहनका ६१

श्रीरामचन्द्रका ६६

श्रीराघवानन्दकुमार ५८

श्रीकोमलकान्तका ७३

लेख

मैथिलीक समस्या

श्रीवच्चाठाकुर ४५

कविता

शिशिर

युवकसँ

गीत

सूतक महत्त्व

देखल आजु...

आचार्य श्रीआनन्दका ७१

पं० श्रीजीवनाथका ४३

श्री 'इन्दु' ६५

श्रीचन्द्रावतीका ७०

श्रीरूपनाशरण ७०

युवकसँ

पण्डितश्रीजीवनाथभा

चाही जँ युवकवृन्द ! दुःशासन-दुर्गपर
अजु न-पताका निज छनहिमे गाढ़िदी
चिरसँ असह्य अहाँ मैथिलीक असम्मान
कूटनीति-परदाकेँ टूकटूक फाड़ि दी
भूतजेकाँ माथपर चढ़ल भयहीन जे
द्वेषिक घमण्ड-विष डाकनिसँ झाड़िदी
छाड़ि दी अपन द्वेष जारिदी आलस्यघर
वारिदी विजयदीप विघ्नतम टाड़िदी

चाही जँ युवकवृन्द ! राख्य देशप्रेमकेँ
शीघ्र कर्ममार्गपर लार निज कायकेँ
दैवकृतकर्मफल पावन बनाय अहाँ
मैथिलीक चरणमे माथकेँ लगायकेँ
सज्जन भ्रमर पुञ्ज नित्य जत प्रेम मग्न
पावि प्रीति सुधा, ताहि काव्यकुञ्ज जायकेँ
उज्ज्वल वनाउ निज अन्तर तथा बाह्यकेँ
मैथिलीक दिव्यगङ्गाधारमे नहायकेँ

चाहीजँ युवकवृन्द ! जननी सम्मान अहाँ
आउ मिलि जाउ मानसिक प्रसादसँ
सर्वत्र पसरल प्रमत्तगज भुण्डकेँ थर
थर कपाय निज घोर सिंहनादसँ
भारतीय भाषा केर उच्च सिंहासन पर
पूजनीय मैथिलीकेँ बैसाय अतिव्हादसँ
विश्वकेँ देखाय वरवीरता, अपन आइ
मुक्त करु, आत्मा निज अपदुता प्रवादसँ

मैथिलीक समस्या

हम अंगरेजीक महान विद्वान भए सकैत छी, बंगलाक प्रचुर ज्ञान प्राप्त कए सकैत छी, परन्तु शेक्सपियर वा रवीन्द्रनाथ बनर्ज हमरा हेतु सहज नहि। कवि विद्यापतिक प्रतिभा मैथिलीअहिमे चमकलान्ह, सूरक ब्रजभाषामे एवं रवीन्द्रनाथक बंगलामे। तएँ वाएट प्रभृति संसारक महान-महान शिक्षा-शास्त्री लोकनिक एहि विषयमे मतैक्य छैन्हि जे नेना सभकेँ साहित्य विषयक ज्ञान अपनहि मातृभाषाक द्वारा हो जाहिसँ ओ शैशवावस्थहिसँ परिचित होथि। ओ शिक्षा शिक्षा नहि थीक जाहिमे मातृभाषाक स्थान अनिवार्य नहि हो।

भारत एक विशाल देश अछि जकर एक-एक प्रदेशक तुलना यूरोपक एक-एक देशसँ भए सकैछ तेहना स्थितिमे भारतमे भिन्न-भिन्न भाषा एवं संस्कृतिक हएब स्वाभाविके थीक। परञ्च भारतीय संस्कृतिक विशेषता ई छैक जे एहि अनेकताक अन्तरालमे एकताक धारा बहैत स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ। ई संस्कृति कतहु निहित अछि तँ अछि प्रान्तीय संस्कृति सभमे अन्यत्र तँ तकलहु नहि भेटत। भिन्न-भिन्न प्रान्तक भाषा एवं ओकरा सभैक साहित्यमे आवद्ध प्रान्तीय संस्कृति सभ बहुमुखी भारतीय संस्कृतिक एकर अंग थीक-अविभाज्य अंग। यदि एहि सभमेसँ एकोटाकेँ नष्ट कए देल जाइक तँ ई विनु कुरूप भेने नहि रहि सकैछ।

कोनो देश वा जातिक मर्यादा ओकर वेश, भूषा, साहित्य एवं लिपि पर निर्भर करैछ। ताहूमे भाषा एवं लिपि संस्कृतिक सभसँ प्रधान अंग थीक। मातृभाषासँ त मनुष्यकेँ अविनाभावक सम्बन्ध छैक। जे जाति एहि सभक रक्षा करैछ तकरे गणना जीवित जातिमे होइछ। जे नहि कए सकैछ ओहि जातिकेँ मृतवत् बुझवाक चाही। भिन्न-भिन्न प्रदेशमे बसनिहार भारतवासी सभक अपन-अपन विशेषता छैन्हि--अपन-अपन मर्यादा, अपन-अपन भाषा, अपन-अपन लिपि, खाहें ओ पञ्जाबी होथि वा बंगाली, महाराष्ट्री होथि वा मैथिल, आसामी होथि वा उड़िया। एही सभसँ तँ जातीय जीवनकेँ नष्ट करब थीक, ओकर विशिष्ट अस्तित्वक लोप करब थीक। कोनो अंग्रेज लेखकक उक्ति

अछि जे भाषैक द्वारा जातीय वैशिष्ट्य व्यक्तिमे अवैत छैक । कोनो मनुष्यक मातृभाषाक अपहरण कए लिओक आ ओ शीघ्र अपना घरहुमे विदेशी भए जाएत । तएँ हेतु हमरा लोकनि देखैत छी जे जतए कतौ विदेशी शासनक स्थापना भेल सर्वत्र विजेता विजित जातिपर अपन भाषा लादल । एतहु सएह भेल । जखन मुसलमानी शासन छल हमरा सभपर फारसी लादल गेल एवं जखन ब्रिटिश तखन अंगरेजी ।

जाहि सुलभतासँ मनुष्य कठिनसँ कठिन विषयक ज्ञान अपन मातृभाषाक माध्यमसँ प्राप्त कए सकैछ ओतबा आन भाषाक माध्यमे नहि । कोनो व्यक्तिक साहित्यिक प्रतिभा जेना सहजतया अपन मातृभाषामे प्रस्फुटित होइछ ओना अन्य भाषामे नहि । कोनो भाषाक विद्वान बनब दोसर वस्तु थीक । हम अंगरेजोक महान विद्वान भए सकैत छी, बंगलाक प्रचुर ज्ञान प्राप्त कए सकैत छी, परन्तु शेक्सपियर वा रवीन्द्रनाथ बनब हमरा हेतु सहज नहि । कवि विद्यापतिक प्रतिभा मैथिलीअहिमे चमकलन्हि, सूरक ब्रजभाषामे एवं रवीन्द्रनाथक बंगलामे । तएँ वाएंट प्रभृति संसारक महान-महान शिक्षा-शास्त्री लोकनिक एहि विषयमे मतैक्य छैन्हि जे नेना सभकेँ साहित्य विषयक ज्ञान अपनहि मातृभाषाक द्वारा होमक चाही, ओहि भाषाक द्वारा जाहिसँ ओ शैशवावस्थहिसँ परिचित होथि । ओ शिक्षा शिक्षा नहि थीक जाहिमे मातृभाषाक स्थान अनिवार्य नहि हो ।

शिक्षामे मातृभाषाक अनादरक की फल होइत छैक ई देखबाक हो तँ मिथिलहिमे देखि सकैत छी । हमरा लोकनिक मैथिली भाषी सभक मध्य एहनो व्यक्ति सभ छथि जे बी०२०, एम०ए० धरि पढ़ि उच्च-उच्च पद प्राप्त कए लेलन्हि । मुदा अपना जिलो मे, अपना गामहु मे जखन हुनका कोनो विषयपर मैथिली-भाषी जनताकेँ मध्य भाषण करए कहिओन्ह तँ बिनु हिन्दी वा अन्य भाषाक आश्रय नेने नहि कए सकताह । अपन मातृभाषाक ज्ञानक कमीकेँ ओ लोकनि राष्ट्रभाषाक पाछुमे नुक्कबए चाहैत छथि । हमरा लोकनिक माननीय राष्ट्रपति भोजपुरी भाषी जनताक मध्य भोजपुरीमे एवं बंगला भाषीक मध्य बंगलामे बजैत देखल गेल छथि, परञ्च हमरा लोकनिकेँ मैथिलीमे बाजबमे अपनहु जिलामे संकोच हुअए ई कतेक लज्जाक विषय थीक । की कोनो जातिक पतन अहूँ सँ आगाँ जा सकैछ ? कथमपि नहि ।

कतोक गोटे कहताह जे मैथिली तँ हिन्दीक एक बोली मात्र थीक तखन मैथिलीपर एतैक जोर किएक । परञ्च मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बुझब सर्वथा भ्रम थीक । एही भ्रमक कारणेँ मैथिलीक एहन विचित्र स्थिति भए गेल छैक जे भारतक एक प्रधान भाषा भइयो कएँ ई भारतीय संविधानमे उल्लेख नहि पओलक अछि आओर अन्यत्रक तँ कथे कोन, अपना क्षेत्रहुमे उपेक्षित भए रहल अछि ।

मैथिली भाषाक जन्म भारतक अन्यान्य प्रमुख भाषा सभक संगहि संस्कृत तथा प्राकृत सँ भेल छैक जेना बंगला वा गुजरातीक । एकर उत्पत्ति एवं हिन्दीक उत्पत्ति भारतक दुई भिन्न-भिन्न प्रदेशमे स्वतन्त्र रूपेँ ओहिना भेल अछि जेना मराठी ओ पंजाबीक । ने हिन्दीए मैथिलीक विकसित रूप थीक ने मैथिलीए हिन्दीक विकृत । दुहु एक दोसरसँ सर्वथा स्वतन्त्र अछि जेना हिन्दी आ गुजराती । ओना तँ संस्कृतसँ उत्पन्न होएबाक कारणेँ उत्तरक सभ भाषामे किछु ने किछु साम्य भेटिते छैक परञ्च क्रिया एवं सर्वनामक रूप, शब्द एवं धातु सभक भिन्नता एकेँ दोसरसँ पृथक कए दैत छैक । डा० ग्रियर्सन, कोलब्रुक, मार्टिन फौलेन, एम० ब्लौच, डा० एस० के० चटर्जी, डा० एस० झा प्रभृति सभ भाषा-विशेषज्ञ लोकनि जनिका सभकेँ भाषा तुलानात्मक विज्ञानक (Philology क) पूर्ण अध्ययन छलन्हि वा छैन्हि मैथिलीकेँ एक स्वरेँ स्वतन्त्र भाषा कहि रहल छथि । डा० होरल अपन 'ग्रामर आफ् ईस्टर्न हिन्दी'मे सिद्ध कएने छथि जे किछु लोकक ई धारणा जे मैथिली भाषा हिन्दीअहिक एक रूप थीक सर्वथा भ्रान्त अछि । डा० ग्रियर्सन अपन व्याकरणक भूमिकामे लिखैत छथि जे मैथिली हिन्दी एवं बंगलासँ ओहिना भिन्न अछि जेना उड़िया आ मराठी ।

भारतीय अनेकानेक भाषाक जननी संस्कृतसँ मैथिली भाषा हिन्दोक अपेक्षा अधिक निकट अछि । किछुए पदकेँ देखलासँ स्पष्ट भए जाएत । यथा :

संस्कृत	मैथिली	हिन्दी
अस्ति	अछि	है
करोतु	करथु	करे
यातु	जाथु	जाए

संस्कृत	मैथिली	हिन्दी
कुरु	करु	करो
अहम्	हम	मैं
कार्य	काज	काम
अत्र (प्राकृत एत्थ)	एतय	यहाँ
तत्र	ततए	वहाँ
यदा (प्रा० यइया)	जहिया	जब
तदा (,, तइया)	तहिया	तब
कुत्र	कतय	कहाँ
मत्स्य (प्रा० मच्छ)	माछ	मछली

हिन्दी, बंगला तथा मैथिली तीनों भाषामें क्रियाक रूपावली वर्तमान, भूत एवं भविष्यत् तीनों कालमें देखलासँ एकटा नेतहुकेँ ई प्रत्यक्ष भए जाइत जे बंगला यदि हिन्दीक बोली नहि तँ मैथिलीओ कोनो प्रकारेँ ओकर बोली नहि भए सकैछ ।

बंगला	मैथिली	हिन्दी
उ.पु.—एक व० आमि करछी वा करितेछी	हम करै छी वा करैतछी	मैं करता हूँ
बहुव० आमरा ,, मध्यम. पु. एकव. तुमि करछ ,, बहुव. तोमरा ,, अ०पु० एक व० ओ करछे	हमरा सभ ,, तों करैछ तोरा सभ ,, ओ करैछ	हम करते हैं तू करता है तुम करते हो वह करता है

भूत काल [सामान्य]

उ०पु० एक व० आमि करिलाम	हम कएलहुँ	मैंने किया
म०पु० ,, ,, तुमि करिले	तों कएलेँ	तू ने किया
अ०पु० ,, ,, ओ करिल	ओ कएल	उसने किया
आमि करियाछी	आसन्न भूत	
तुमि करियाछ	हम कएने छी	मैंने किया
ओ करिया छे	तों कएने छ	तूने किया है
	ओ कएने अछि	उसने किया है

पूर्णभूत

आमि करिया छिलाम
तुमि करिया छिले
ओ करिया छिल

हम कएने छलहुँ
तो कएने छले
ओ कएने छल

मैंने किया था
तू ने किया था
उसने किया था

अपूर्ण भूत

आमि करिते छिलाम
तुमि करिते छिले
ओ करिते छिल

हम करैत छलहुँ
तों करैत छले
ओ करैत छल

मैं करता था
तू करता था
वह करता था

भविष्यत् काल

आमि करिव
तुमि करिवे
ओ करिवे

हम करव
तों करवे
ओ करत

मैं करूँगा
तू करेगा
वह करेगा

जे, से, के, ओ प्रभृति अनेक सर्वनाम अछि जे बंगला एवं मैथिलीमे प्रयुक्त होइछ परञ्च हिन्दीमे ओकरा सभक दोसरेरूप छैक । एकर कारण ई अछि जे मैथिली ओहि परिवारक भाषा थीक जकर बंगला, आसामी, उड़िया एवं नेपाली । जहिना क्रिया पद मैथिलीक अपन छैक तहिना शब्द भएडारो । धातुएक संख्या जौ लेल जाए तँ मैथिलीमे असंख्य धातु भेटत जकरा सभक हिन्दीक कोषमे कोनो चर्च नहि । बंगाली, आसामी प्रभृति अन्य अहिन्दी भाषा सभकेँ शुद्ध हिन्दी वाजबामे जे व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइ होइत छैन्हि सएह मैथिली भाषियोकेँ विहारक बंगला - भाषा नेने सभ प्रारम्भकेँ कक्षासँ बंगलाक अध्ययन छोड़ाए हिन्दीक अध्ययन कराओल जाइन्हि तँ हुनका सभकेँ जतबा असुविधा होएतैन्हि ओतवहि मैथिलीओ भाषा शिशु सभ केँ होइत छैन्हि । परञ्च एहि दिसि ध्यान के देत ।

यद्यपि शिक्षाविभाग मैथिलीकेँ एक स्वतन्त्र भाषा मानि प्रारम्भिक कक्षासँ लए एम०ए० धरि ओहिना स्थान देल अछि जेना बंगला वा उर्दूकेँ, तथापि एकर पठन-पाठन जाहि रूपेँ होमक चाही तेना नहि भए रहल अछि । कागत पर तँ ई मैथिलीभाषी छात्र लोकनिक हेतु सप्तम वर्गधरि बंगले जकाँ शिक्षाक माध्यमो स्वोक्त अछि, परञ्च शिक्षा-विभाग एहि दिशि कोनो ध्यान नहि दए रहल अछि जे राज्यक मैथिलीभाषी नेना सभक शिक्षा प्रारम्भिको कक्षामे

मातृभाषाक माध्यमसँ होइत छैन्हि वा नहि । गुरु लोकनिक प्रशिक्षणमे एहि भाषाक एखन धरि कोनो चर्च नहि । जखन मैथिलीकेँ शिक्षा विभाग हिन्दीसँ भिन्न एक स्वतन्त्र भाषा मानि लेलक तखन कोनो कारण नहि जे मैथिली-भाषी नेता सभकेँ ओ एखनहु हिन्दी भाषी बुझैत रहए । नेतरहाटमे जे सरकारी पब्लिक स्कूल फूजल अछि ताहिमे उर्दू, बंगला एवं उड़िया पाठी छात्र लेल जा सकैत छथि परञ्च मैथिली पाठी नहि । एहना स्थितिमे ककरा मैथिलीक पठन-पाठनमे उत्साह होतैक । विहार माध्यमिक विद्यालय सभक बोर्ड परीक्षामे मैथिली भाषी छात्रलोकनिकेँ अपन मातृभाषाक माध्यमसँ परीक्षा देबाक सुविधा मातृभाषाक अतिरिक्त अन्य पत्रमे नहि भेटलैन्हि अछि । उक्त परीक्षामे अंग्रेजीमे अनुवाद करबाक हेतु जे गद्यांश देल जाइत छैन्हि से हिन्दीमे रहैछ मैथिलीमे नहि, यद्यपि उच्च कक्षाक विश्वविद्यालयक परीक्षामे (I.A. तथा B.A.) एहि प्रकारक वस्तु अन्यान्य भाषाक संग-संग मैथिलीओमे देल जाइछ । ई कतेक हास्यास्पद अछि । ई तँ भेल शिक्षण संस्था सभक कथा । आन प्रान्त जकाँ विहारहुमे सरकारी नोकरी प्रदान करबाक हेतु जन सेवा आयोग द्वारा संचालित परीक्षा होइछ । ओहूमे राष्ट्रभाषाक संग-संग उर्दू, फारसी, अरबी धरिकेँ स्थान छैक परञ्च मैथिलीकेँ जे विहारक अपन वस्तु थीक कोनो स्थान नहि । ई कतेक दुःखद थीक । राजकीय नोकरी प्राप्त करबामे मैथिली भाषी अपन मातृभाषाक अध्ययनसँ अपनहु राज्यमे कोनो लाभ नहि उठा सकैत छथि । एहि सम्बन्धमे जतबाँ सुविधा अन्य लोकनिकेँ प्राप्त छैन्हि, ओतबाँ मैथिलीभाषी सभकेँ नहि ।

सरकारक दिशिसँ गाम-गाममे ग्राम पञ्चायत स्थापित भए रहल अछि । बहुतो गाममे ई कार्य्यो कए रहल अछि । ई ककरो विदित नहि जे विहारक एहि अंचलक जनभाषा मैथिलीए थीक । यदि मैथिलीक द्वारा पञ्चायतक कार्य्य हो तँ ग्रामीण जनता ओहिमे विशेष अभिरुचि देखाए सकैत छथि । स्वराज्यक यथार्थताक तँ हुनका लोकनिकेँ तखनहि अनुभव हएतैन्हि जखन ओ अपन मातृभाषामे सार्वजनिक कार्य्य होइत देखताह । हमरा लोकनिक देश बहुत दिन धरि परतन्त्र रहल । परतन्त्रताक युगमे केन्द्रीय शासन जखन जकरा हाथमे रहलैक ओकरे भाषा सम्पूर्ण देशपर लादल गेल, खाहेँ ओ

मुसलमानी काल हो वा ब्रिटिश तएँ हेतु ई अत्यन्त आवश्यक अछि जे आब देशक प्रत्येक अञ्चलमे अञ्चलीय भाषा द्वारा सार्वजनिक कार्य हुअए यदि ओ भाषा तद्योग्य हो । एहिसँ ग्रामीण जनतामे आश्चर्यजनक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन एवं अदम्य उत्साह होएतैन्हि । हँ, एतवा अवश्य जे राष्ट्रभाषाक अध्ययन सर्वत्र अनिवार्य राखल जाए जाहिसँ राज्यक वा देशक एक भाषा-भाषी दोसर भाषा-भाषीसँ सम्बन्ध बनओने रहथि जेना एखन धरि अंग्रेजी द्वारा छल ।

आब प्रश्न उठैछ जे मैथिली बिहारक ओहि अञ्चलमे जतए ई बाजल जाइछ सार्वजनिक कार्य भाषा बनबा योग्य अछि किम्बा नहि ! हम पूर्वहि कहि आएल छी जे संस्कृतसँ हिन्दीक अपेक्षा मैथिली अधिक निकट अछि । तएँ एहि भाषामे बंगले जकाँ अभिव्यञ्जना शक्ति हिन्दीसँ कतहु अधिक अछि । दोसर ई जे एकरा सार्वजनिक कार्यक भाषा रहबाक परम्परा अनेक शताब्दीक छैक । मुसलमानियो शासन कालमे बिहारक ई अञ्चल कर्णाल वंश, ओइनिवार वंश एवं खण्डवला वंश द्वारा शासित रहि अपन भाषा एवं संस्कृतिक रक्षा कएनहि रहल, जे सौभाग्य एहि राज्यक अन्य अञ्चलकेँ नहि भेलन्हि । कहए नहि पड़त जे मैथिलीए एहि अञ्चलक राजभाषा छल आओर एहि पद पर ई राजा नान्यदेवक समय (१०६७ ई०)सँ लए ताधरि आसीन रहल यावत् ईस्ट इन्डिया कम्पनी द्वारा उत्तर बिहारक एहि प्रकारक छोट खोट राज्य सभ जमीन्दारीमे परिणत नहि कएल गेल । एकर पुष्टिमे अनेक ऐतिहासिक प्रमाण एखनहु भेटैछ; यथा 'बहिखत पत्र' इत्यादि । नेपालहुमे गोर्खा लोकनिक आगमनसँ पूर्व अर्थात् अठारहम शताब्दी धरि राजभाषा मैथिलीए छल । जाहि हिन्दी (खड़ी बोली) केँ हमरा लोकनि राष्ट्रभाषाक आदरणीय पदपर आसीन कएल अछि ओ कालुक भाषा थीक । ओकर प्रधानता केवल गत शताब्दीमे भेल अछि । फारसी लिपिमे लिखल जाएवाक कारणेँ ई हिन्दुस्तानी अर्थात् 'दूक' पेटमे तेना समाय गेल छल जे एकर उद्धारक कोनो मार्ग नहि सुझैत छल । काशी नागरी प्रचारिणी सभाक प्राचीन कार्यकर्तागण, स्व० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्व० श्यामसुन्दरदास, माननीय पं० मदनमोहन मालवीय प्रभृति मनीषीगण धन्यवादाई थिकाह जनिका लोकनिक असीम प्रयत्ने

उद्देश्य पृथक् वर्तमान संस्कृतनिष्ठ हिन्दीक सत्ता देशमे स्थापित भए सकल । ओएह हिन्दी आइ राष्ट्रभाषाक महान पदके सुशोभित कए रहल अछि । ई गौरव एकरा एही हेतु भेटलैक अछि जे एकरा छोड़ि आन कोनो एहन भारतीय भाषा नहि अछि जे बंबईसँ लए कलकत्ता धरि एतेक पैघ जन समुदाय द्वारा अत्यल्प प्रयत्नेँ बोधगम्य भए सकए । सभ दृष्टिकोणकेँ विचार कएलासँ राष्ट्रभाषाक हेतु हिन्दीएटा सभसँ अधिक उपयुक्त वृत्ति पड़ैछ ।

मैथिली साहित्य तँ ६०० सए वर्षसँ सम्भवतः अहूँ अधिक कालसँ सञ्चित होइत आएल अछि । एहि दीर्घ कालक अवधिमे ई एकसँ एक बढ़ि कएँ उत्तम ग्रन्थ सभक सृजन कएल गेल । नाटकके संख्या लेलजाए तँ मैथिलीमे शताधिक हएत । मैथिलीक अनेकानेक पोथी अछि जे द्रव्याभावक कारणेँ अद्यावधि प्रकाशित नहिँ भए सकल अछि । राष्ट्रकीय प्रश्रय जतवा देशक आनभाषा सभकेँ प्राप्त छैक वा प्राप्त भेलैक अछि ओकर चतुर्थांशो मैथिलीकेँ भेटलैक तँ आइ ई प्रमुख कहओनिहार देशक कतोक भाषासँ आगाँ रहैत, कारण प्राचीने सामग्री एकरा ततेक छैक जे तकरे अन्वेषण कए यदि प्रकाशित कए देल जाइक तँ एकर भण्डार भरि जएतैक ।

समस्त उत्तर भारतमे प्रथम गद्य-रचना मैथिलीअहिमे भेल । ई पुस्तक थीक 'वर्णरत्नाकर' जकर शैली संस्कृतक कादम्बरी जकाँ छैक । पुनः ई गौरव मैथिलीअहिकेँ प्राप्त छैक जे एहि महादेशक साहित्यिक क्षितिज पर सूर एवं तुलसीक उदय हएवासँ बहुत पूर्वहिँ ई विद्यापति, उमापति प्रभृति एकसँ एक ख्यात-नामा महाकवि सभकेँ उत्पन्न कएलक जनिका लोकनिकेँ भारतीय कविता क्षेत्रमे पथ-प्रदर्शक बनवाक एवं अनेकोकेँ अनुप्राणित करवाक श्रेय छैन्हि । गोविन्ददास, चण्डेश्वर, रुचिपति, जगद्धर, हर्षनाथ, चन्द्र इत्यादि एकसँ एक उत्कृष्ट कवि एवं लेखक एहि भाषामे भए गेल छथि । मैथिली कविता सभक प्रभाव ओकर पूर्वीय बहिन सभपर अर्थात् बंगला, आसामी एवं किछू दूरधरि उड़िया भाषापर पड़ल अछि । मैथिली एवं बंगलाक सम्मिश्रणसँ त एक नवीन साहित्यक बंगालमे जन्मे भए गेल अछि । विद्यापति, गोविन्ददास एवं मैथिलीक अन्यान्य कवि लोकनि जाहिभाषामे ब्रज प्रेमक वर्णन कएल ओकर अनुकरण करैत बंगालक सर्वोत्तम शृङ्गारिक भक्त कवि लोकनि ३०० तीन सए

वर्षसँ ऊपरसँ कविता करैत आवि रहल छथि । ई प्रवाह एखन धरि अछि । हिन्दीक रुपरेखा मैथिलीसँ ततबा भिन्न अछि जे हिन्दी जगतक हेतु ई प्रायः सम्भव नहि जे ओ एना कए सकए । मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली कहि अपन प्रचारक बलेँ हमरा लोकनि भारतीय भाषा सभक बीच उचित स्थान प्राप्त करबासँ बञ्चित भने करा दी परञ्च गोविन्ददास सन-सन महाकविक उत्कृष्ट रचनाकेँ हिन्दी अपना पेटमे लए नहिँ पचा सकैछ । लाखो चेष्टा कएलापर हिन्दी जगत मैथिलीक प्राचीन कवि विद्यापतियोकेँ नहि पचाए सकल । हुनक भाषा अन्यकविक भाषासँ एकदम भिन्ने वृष्णि पड़ैछ ।

यद्यपि विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ ओएह स्थान भेटल छैक जे संविधानमे उल्लिखित भाषा सभकेँ, यद्यपि मैथिलीक कतेको ग्रन्थ अन्य भाषामे नहि उपलब्ध अछि तथापि भारतीय संविधानमे एकरा मान्यता नहि देल गेलैक अछि । फलस्वरूप केन्द्रीय सरकारसँ आन भाग्यशाली भाषा सभकेँ जकरा सभक ओहिमे नाम छैक समय-समय पर साहाय्य प्राप्त होइत छैक, ओकरा सभक उन्नतिक हेतु जे राजकीय प्रोत्साहन भेटैछ मैथिली ओहि सभसँ अधिक शतः वञ्चित भए जाइछ । दोसर विषय ई अछि जे विहार मध्य मिथिला सांस्कृतिक प्रधान केन्द्र रहल अछि । ज्योतिष, कर्मकाण्ड, न्याय, संगीत, नाट्य प्रभृति एहन कोनो वस्तु नहि अछि जाहिमे एकर अपन विशेष देन नहि होइक । तिरहुतक नचारीक चर्च 'आइने अकबरी'मे अबुल फजलो कएने छथि । एखनहु मैथिली भाषाक समदाओन अन्य भाषाभाषियहुक आँखिसँ बिनु नोर खसओने नहि रहैछ । मैथिली क्षेत्रक कीर्तनियाँ एवं नारदीय भजन एक समय बड़ प्रशस्त वृष्णल जाइत छल । उत्तरीय विहारक तँ कथे कोन नेपाल तथा सुदूर आसामधरि मैथिली नाटक खेलैल जाइत छल, मुदा ई तँ सिनेमाक युग थीक, सिनेमा ओहि वस्तु सभकेँ बड़ दबाए देल अछि । तथापि ओकरा सभक अस्तित्व सर्वथा लोप नहि भेल अछि । प्रोत्साहन देल जाइक तँ एखनहु ओ सभ अपन प्राचीन गौरवकेँ प्राप्त कए सकैछ । केन्द्रीय सरकार द्वारा जे समय समय पर अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलनक आयोजन होइछ ओहूमे मैथिलीकेँ मान्यता नहि रहबाक कारणेँ मैथिली नाटककेँ कोनो स्थान नहि देल जाइछ । एहिसँ विहारक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक क्षेत्रक देशक राजधानीमे प्रतिनिधित्व नहि होमए पवैछ एवं भारतवासी मैथिली सन मधुर एवं कोमल भाषाक रसास्वादन नहिँ कए सकैत छथि ।

अन्तर्राष्ट्रीय पी० ई० एन नामक साहित्यिक संस्थाक शाखा भारतोमे अछि जकर डा० राधाकृष्णन पं० नेहरु प्रभृति महान पुरुषो सभ सदस्य छथि । उक्त संस्था मैथिलीकेँ भारतक एक प्रमुख भाषा मानैछ एवं मैथिली सन-सन भाषाकेँ सम्बिधानमे मान्यता भेटौक तदर्थ सिफारिशो कएल अछि ।

देशक प्रसिद्ध भाषा-विशेषज्ञ स्वनामधन्य डा० श्रीसुनीतिकुमारचटर्जी जे राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दीक पूर्ण समर्थक छथि हालहुमे घोषित कएल अछि जे [बिहारक भाषा हिन्दी कदापि नहि थीक तँ मैथिलीक गणना भारतक प्रमुख भाषा सभ्य करब परमावश्यक ।

विचारणीय थीक जे उर्दू एवं हिन्दी मे कतबा अन्तर अछि । एकेँ लिपिमे लिखल जाइक तँ दुहुँ दुइ भिन्न भाषा नहि बूझि पड़त, प्रत्युत एकेँ भाषाक दुइ रूप । की उर्दूक अपेक्षा मैथिली हिन्दीक अधिक निकट अछि ? कथमपि नहि । तखन मैथिलीकेँ सम्बिधानमे मान्यता नहि देब कतए धरि युक्ति संगत राष्ट्रक कर्णधारे लोकनिक हेतु विवेचनीय ।

एहि सम्बन्धमे एतबा अवश्य कहए पड़त जे संसदक विहारी सदस्य लोकनि विशेषतः मैथिली-भाषी अञ्चलक अपन कर्तव्य पालन नहि कए रहल छथि । बिहारक एहि भाषाक समस्या दिशि, मैथिली पाठी छात्र लोकनिमे एहि हेतु की क्षोभ छैन्ह तकरा दिशि, अधिकारीवर्गक ध्यान आन के आकर्षित करत । आधुनिक युग प्रचारक युग थिकैक । यातायातक सुविधासँ एक प्रान्त दोसरक अत्यन्त निकट आवि गेल अछि । जे केओ अपन भाषा एवं लिपिकेँ घरे धरि सीमित राखत व्यापकरूपेण व्यवहार नहि करत ओकर ई सभ वस्तु विनु नष्ट भेने नहि रहि सकैछ, कारण आन प्रान्तक भाषा यदि ओकर रेडियो, सिनेमा, पत्र-पत्रिकादिक द्वारा प्रचार अधिक छैक तँ स्थानीयो भाषाक क्षेत्र पर अधिकार जमाइए लैछ । तस्मात् अपन मातृभाषाक रक्षार्थ ओकर उचित सम्मानार्थ प्रत्येक मैथिली भाषीकेँ चाहिऐन्ह जे ओ मैथिली पत्र-पत्रिकादि केँ प्रोत्साहन देथि, गाम-गाम, नगर-नगर मे मैथिली नाटकक प्रचार करथि, सिनेमा कम्पनी सभकेँ मैथिलीक फिल्मक निर्माणक हेतु प्रेरित करथि रेडियो स्टेशनक अधिकारी वर्गकेँ राष्ट्रभाषाक संग-संग बिहारीओ भाषा सभकेँ खास कएँ मैथिली सन सन साहित्यिक भाषा केँ तँ अवश्ये, स्थान देवाक हेतु बाध्य करथि ।

मैथिलीक समस्यापर कोनो निबन्ध मैथिली लिपिक निगु चर्च कएने अपूर्ण रहि जाएत । भारतक अन्योन्य प्रमुख भाषा जकाँ मैथिलीओकेँ अपन लिपि छैक । एकर चर्च 'ललितविस्तर' नामक बौद्ध ग्रन्थमे सेहो कएल गेल अछि भगवान बुद्धक समयमे चौंसठि लिपिक प्रचार छल ताहिमेसँ 'बैदेही' लिपि एक छल । पूर्वमे उत्तर बिहार 'बिदेह' कहलैत छल, तएँ एहिठामक लिपिक नाम 'बैदेही' पड़ल । जखन एकर नाम मिथिला पड़ल तखन ई लिपि 'मिथिलाक्षर' कहबए लागल एवं जखन तिरहुता अंग्रेजीक अंककेँ मैथिली लिपिमे लिखल असँ तुलना कएल जाए तँ दुहुमे बिलक्षण समता भेटैछ । एकर वर्ण-विन्यासक नियम कामधेनु तन्त्र तथा वर्याद्वार तन्त्रमे देल गेल अछि । एही सभसँ एकर प्राचीनता सिद्ध होइछ । एहि लिपिमे लिखल शिलालेख अन्हराठाढ़ीमे एगारहम शताब्दी धरिक भेटल अछि । ओहूँसँ प्राचीन कतिपय लेख भेटैछ शुद्ध तिरहुतामे अछि मुदा जनिहा लोकनिकाँ तिरहुताक ज्ञान नहि छैन्ह ओ लोकनि ओकरा बंगलाक पूर्व रूप बुझैत छथि । मिथिलाक कण-कणमे मैथिली लिपि भीजल अछि कारण ओ सहस्राधिक वर्षसँ चल आबि रहल अछि । आइसँ पचास वर्ष पूर्व बिहारक मैथिली भाषी अञ्चलमे देवाक्षरक प्रचार ओहिना छल जेना ओ आइ बंगालमे अछि । मिथिलाक्षरक काँटा बनबएबामे हमरा लोकनि पछुआए गेलहुँ, फलस्वरूप नवका तुर मुद्रित वस्तुक पढ़बाक प्रेमी भए देवाक्षरक अभ्यास करए लागल जाहिसँ मिथिलाक्षरक व्यवहार स्वाभाविक कम भए गेल । मैथिलीक अनेकानेक उत्कृष्ट ग्रन्थ सभ एखनहु तिरहुता मे लिखल कतोक ठाम सड़ि रहल अछि । अधिकाँश आधुनिक विद्यार्थी मैथिली लिपिसँ अपरिचित रहबाक कारणेँ ओकरा सभक अनुसन्धानो करबामे अपना सभकेँ अक्षम पावत छथि ।

विदेशी शासक वर्गकेँ जन सम्पर्क अत्यल्प रहबाक कारणेँ मैथिली साहित्य एवं लिपिसँ परिचय बहुतो समय धरि नहि भए सकलैन्हि । तएँ एकरहु क्षेत्रमे हिन्दीएक पठन-पाठन प्रारम्भ कराए देलन्हि । हुनका लोकनिक मध्य डा० प्रियर्सन प्रथम व्यक्ति छलाह जे मैथिली लिपि सीखि मैथिली साहित्यक अध्ययन कएलन्हि । ओ 'लिग्युइस्टिक सर्व आफ इन्डिया'मे मैथिली भाषीपर हिन्दी लादबाक अनौचित्यपर पूर्ण प्रकाश देलन्हि अछि ।

यदि सभ मैथिली भाषी सहस्राधिक वर्षसँ चल अवैत अपन लिपिकेँ प्रेम-
 पूवक ओहिना पकड़मे रहितथि जेना बंगाली वा आसामी तँ ई ध्रुव सत्य
 छल जे हुनका लोकनिक मातृभाषाक स्वतन्त्र अस्तित्वपर जाहि प्रकारक आक्र-
 मण भेल से नहि होमए पवैत आओर ओकरो गणना आइ भारतक प्रमुख
 भाषामे ओहिना होइत रहितैक जेना गुजराती वा पञ्जाबीक, बंगला वा
 आसामीक होइछ । जातीय जीवनक रक्षार्थ भाषासँ कनेको कम आवश्यक
 लिपि नहि अछि । हर्षक विषय थीक जे हमरा लोकनिक लिपि एखन धरि
 जोवित अछि । विवाह, उपनयन, चूड़ाकरण, श्राद्ध प्रभृति अवसरपर एख-
 नहु अनेकानेक मैथिली भाषीक परिवारमे मैथिलीए लिपि व्यवहार होइछ ।
 वैवाहिक पञ्जी एखनहु ओहीमे लिखाइछ, सिद्धान्त पत्र ओहीमे भेटैछ ।
 पटना एवं विहार विश्वविद्यालय मैथिली पत्रक उत्तर मैथिली लिपिमे देवाक
 सुबिधा प्रदान कएनहि अछि । आव इहो निश्चित भेल अछिजे किछु अंकक
 प्रश्न उक्त पत्र मे मैथिली लिपिक ज्ञानक परीक्षाक हेतु रहए । हाइयो स्कूल
 सभक बोर्ड परीक्षामे एहि प्रकारक व्यवस्था होमक चाही । परञ्च सभसँ
 आवश्यक अछि मैथिली लिपिमे शीघ्र मुद्रणक व्यवस्था हएव । परुकाँ कान-
 पुरक सर हरगोविन्द मिश्रजी एहि हेतु वचन देने छलाह परञ्च जानि नहि
 एखन धरि कतवा काज एहि सम्बन्धमे भेल अछि ।

देशक कतिपय गण्यमान्य लोकक इच्छा छैन्ह जे मैथिली अपन स्वतन्त्र
 अस्तित्वके हिन्दीक हेतु सर्वथा लोप कए लिअए आओर मैथिलीओ भाषीकेँ
 केवल हिन्दीएक शिक्षा देल जाइन्ह । ओहो लोकनि अपनाकेँ हिन्दीए
 भाषी बुझथु । परञ्च ओहुना कएला सन्ताँ मैथिलीभाषी जनताकेँ पूर्ण हिन्दी
 भाषी बनएबामे कतिपय शताब्दी लागि जाएत । किन्तु एहि कार्यसँ मैथिली
 भाषाक स्वाभाविक साहित्यिक प्रगति अवरुद्ध भए जाएत, जाहिसँ केवल
 मैथिलीए भाषीक हानि हएतैन्ह सएह नहि, अपितु अखिल भारतीय साहित्य
 एवं संस्कृतिक अपार हानि हएत कारण भारतीय संस्कृति तँ ओकर प्रान्तीय
 भाषा सभमे विद्यमान अछि अन्यत्र नहि, जेना कि राहुल सांकृत्यायन प्रभृति
 देशक महान-महान विद्वान लोकनिक मत छैन्ह । कवीन्द्र रवीन्द्रनाथोक उक्ति
 छैन्ह जे भारतीय संस्कृति एक कमलक फूल थोक जकर प्रान्तीय संस्कृति सभ

पात थिकैक कोनो पातके तोड़ि देलासँ जेना फूलक सौन्दर्य नष्ट भए जाइछ तहिना प्रान्तीय संस्कृति सभमे सँ एकोटाकेँ 'नष्ट भेलासँ भारतीय संस्कृतिक की दशा हएत।' जेना हम पूर्वहि कहि आयल छी ।

मैथिलीक उन्नतिसँ हिन्दीकेँ कोनो क्षति हएतैक ई आशंका सर्वथा निर्मूल थीक, कारण उर्दू, बंगला, उड़िया प्रभृति अनेकानेक भाषाक उन्नतिसँ जखन एकरा कोनो क्षति नहि होइछ तँ मैथिलीएक उन्नतिसँ कोना हएतैक । हिन्दीक अध्ययन तँ की हिन्दी भाषी आ की अहिन्दी भाषी सभक हेतु जखन देश भरि मे अनिवार्य बनाओल जा रहल अछि तखन आशंका कथोक ।

मैथिलीक पुनः जागृतिक नवयुग अएला सन्तौ मैथिली भाषी द्वारा विहारकेँ अत्यधिक लाभ हएत, कारण ओहो एहि स्थितिमे आवि जाएत जे बंगाल प्रभृति अन्य प्रदेश जकाँ साहित्यिक क्षेत्रमे अपन किछु निजी वस्तु लए भारत माताक चरणमे राखि सकए, जेना विद्यापति, ज्योतिरीश्वर, उमापति, गोविन्ददास प्रभृति महान्-महान् साहित्यिक लोकनकेँ जन्म दए ओ एक समय केँ एने छल, जखन आइ प्रमुख कहओनिहार कतोक भाषा साहित्यकीय छल । हिन्दी तँ आव सम्पूर्ण राष्ट्रक आदरणीय वस्तु भए गेल, कोनो प्रान्त विशेषक नहि । विहारक त ओ जनभाषा थीके ने । विहारक लोकभाषा सभ मे साहित्यिक हएवाक गौरव तँ मैथिलीएटाकेँ प्राप्त छैक । एकरा समृद्धिशाली बनएवासँ भारतीय भाषा सभक बीच एकरा उचित स्थान दिअएवाक हेतु प्रयत्न करबासँ, यदि विहारेक लोक जी चोरावधि तँ आन के एकरा दिशि ताकत ।

आशा करैत छी संसदक विहारी सदस्यगण मैथिलीकेँ न्यायपूर्ण अधिकार दिअएवाक हेतु आवहु प्रयत्नशील होएताह । हम डा० सुनीति कुमार चटर्जीक संग मीलि जगदम्बा जानकी सँ प्रार्थना करैत एहि निबन्धकेँ समाप्त करैत छी ।

“मिथिलाक प्राचीन भाषा मैथिली अपन उचित स्थान प्राप्त करए आओर ओ भारत माताक कण्ठ मे अन्यान्य भाषा मणि सभ जकाँ अनुस्यूत भए जग-मगा उठए एवं हिन्दी ओहि मालाक मध्य मणि बनए ।” †

हम कहैत छी ई अहाँक भ्रम मात्र अछि । अहाँ स्त्री जातिकेँ मूत्र
तत्त्वकेँ नहि जनैत छी । मुदा स्त्री मनुष्यक हृदयकेँ समतत्त्वकेँ जनैत
छैक । ओ इहो जनैत अछि जे हमर लक्ष्य कोन अछि । ताहि ठाम
ओ बाण मारैत अछि । आर पुष्प केँ अपन हार मानै पड़ैत छैक ।

“सा रे ग म प ध नी सा”—ई सप्त स्वर राजप्रसादक अखंड भागमे मुखरित
भ उठल । संगहिसंग वीणाक तारपर तिष्यरक्षिताक आङ्गुर सेहो मंथर
गतिसँ नृत्य करय लागल । राज-प्रासादक नीरव खण्डमे वीणाक स्वर-लहरी
केलि करय लागल । प्रकृति मूक छल आर पुष्पित किसलय स्पन्दित भय
उठल । कुणाल सेहो शान्त आर अडिग छल । एहन वृम्भि पड़ल जे युग
पश्चात् पुनः एक धेर महाराज अशोकक शून्य प्रासाद मे कलाक महाप्राणताक
भीषण शंखनाद भेल हो ।

क्षण पश्चात् महारानी तिष्यरक्षिता शान्त छलीह हुनक वीणा मूक छलैन्ह आर
कुणाल सेहो ।

‘ओह ! अहाँक हाथ त वीणा पर अपूर्व नृत्य करैत अछि । आरस्वर ! ओकर
त कथे कोन ?’ विहुँसैत कुणाल बाजल ।

रक्षिता—कुणाल ! ई अहाँ की देखलहुँ अछि । हमर कला साधना त अहाँ
सिंहलमे देखितहुँ । ई एकान्त गराँ घोंटवला शान्तिमे कतहु कलाक
उपासना भ सकैत छैक ? कला अपना लेल एक विस्तृत पृष्ठभूमि चाहैत छैक ।
एहेन नीरव वातावरणमे जाहि ठाम सतत् मंत्रोच्चारण होइत रहैत छैक
कलाक साधना सदा उपेक्षित छैक । कलाकारक हेतु किछु कला-प्रेमी चाहिएक
जे ओकर कलाक आदर कय सकै । अथवा कलाक हेतु प्रकृतिक फूजल पृष्ठ
चाहिएक जाहिठाम वीणाक तार पर प्रकृतिक कण-कण स्पन्दित भ जाए ।
वाचाल भय उठय । ओह की कहू ! जखन कखनो सिंहलक कला-उपासना
कक्षक स्मरण भ जाइत अछि त मोन करैत अछि जे ई विस्तृत प्रासाद खण्डकेँ

तोड़ि-फोड़िक पड़ाइ । ओह.....। एक दीर्घ निःस्वास छोड़ैत अछि । ओहि निस्वासमे छलैक बेचैनी, दीनता, पराधीनता, आर विवशताक समन्वय । कुणाल—अवश्य आर्ये ! कलाकारक हेतु सबसँ पैघ आहुति छैक ओकर कला-त्याग, कलाकारक स्वर्ग आर नरक दुहु ओकर कलेमे सन्निद्ध रहैत छैक । हमरो ओ दिन स्मरण अबैत अछि । जखन भाइ महेन्द्र आर बहिन मित्रा अपन सम्पूर्ण कलाक उपादानकेँ जल-प्रवाह कय बौद्ध भिक्षुक बनि गेलाह । एहने बिकट घड़ी.....। तहिया स ई राजप्रसाद मृत्युप्राय भ गेल । रक्षिता—कुणाल !.....

आर दोसर क्षण तिष्यरक्षिताक दृष्टि कुणालक दुख पर अंकित भ गेलैक । ओ निमिषेक दृष्टिसँ कुणालक भव्य ओ सुन्दर मुखकेँ देख लागल ।

कुणाल अहाँक ई विशाल आर अर्धमूनल आँखि त अपूर्व अछि । मोन करैत अछि जे एहेन सुंदर उपादानकेँ अपने लग राखी ।

रक्षिता भावोन्मेषमे बाजि उठल ।

कुणाल—बेस हर्जे कोन । अहाँ माता छी आर हम पुत्र । अहाँक प्रत्येक आज्ञा हमरा लेल वरदान हएत । कही त आँखि निकालि क...अहाँ

रक्षिता—नहि ! नहि ! कुमार एहेन अमंगल जुनि बाजू ।

आर ओ भावोन्मेष भ कुणालक आँखि केँ बेरि-बेरि चूमि लेलक । ओहि चुम्बनमे सर्पिणीक विषाक्त दंस रहैक । जकरा कुणाल भ्रमवश माताक प्रसाद बुझलक । ओ नारीक प्रपञ्च कि जाने गेल ।

तिष्यरक्षिता—कुणाल.....कुणाल.....। अहाँ हमरासँ एको क्षण पृथक् जुनि रहू । आर संगहि अहाँ जाहि सम्बोधनक चिन्हसँ कंचनमालाकेँ बजवैत छिएन्ह सैह हमरो कहल करू । याचनाक स्वरमे रक्षिता बाजल ।

मुदा ओ पत्नी अछि आर अहाँ त माता छी । आश्चर्यमिश्रित स्वर कुणाल क छलैक ।

कुणाल रक्षिताक मूक निमंत्रणकेँ नहि बूझि सकल । ओकर प्राणक बोणा कतै इंगित करैत छलैक से कुणाल नहि बूझि सकल ।

ओ त दोसरे भ्रमसँ प्रमत्त छल । ओ माताक सात्त्विक प्रेम रक्षितामे पैबाक स्वप्न देखैत छल । जे ओकर भ्रम मात्र रहैक ।

कुमार ! अहाँक ई भ्रम मात्र अछि । चितित स्वरमे कंचनमाला बाजल ।

कुणाल—नहि-नहि प्रिये ! ओ त माता-तुल्य छथि । मुदा हँ...। कखनोक हुनक किछु अप्रत्याशित व्यवहार हमरा प्रति होइत छैन्ह ।

कंचन—हम सभ जनैत छी । प्रकट करवाक प्रयोजन नहि ।

हम कहैत छी ई अहाँक भ्रम मात्र अछि । अहाँ स्त्री जातिकेँ मूल तत्त्वकेँ नहि जनैत छी । मुदा स्त्री मनुष्यक हृदयकेँ सभ तत्त्वकेँ जनैत छैक । ओ इहो जनैत अछि जे हमर लक्ष्य कोन अछि । ताहि ठाम ओ वाण मारैत अछि । आर पुरुषकेँ अपन हार मानै पड़ैत छैक ।

हम कहैत छी कुमार ! ई अहाँक भ्रम अछि ! भ्रम अछि ! कंचनमाला अपन विषयपर दृढ़ छलीह ।

कुणाल—मुदा.....।

मध्ये मे गप्प करैत कंचनमाला बाजि उठल—नहि । मुदा किछु नहि, कुमार ! आगौँ वासनाक भीषण अग्नि जरैत छल, जकर भीषण ज्वाला अपरिमित छैक । हमरा त ई केवल नाटक मात्र बूझि पड़ैत अछि । जकर पृष्ठभूमि अहाँ छी । एहि नाटकक दृश्य बिहाड़ि थिक जे अहाँकेँ कतय उड़ाय कै फेंक देत तकर ठेकान नहि । विकंपित स्वरमे कंचनमाला बजलीह ।

तखन एकर उपाय ? कुणाल चिंतित भ उठल कंचन आव त एहिठामसँ पड़ा-एब छाड़ि आर दोसर कोनो उपाय नहि ।

बेस ।—संक्षिप्त उत्तर छल कुणालक ।

दोसर दिन कुणाल रक्षिताकेँ अपन भाग्यपर क्रीड़ाक हेतु छाड़िक राज-प्रसादसँ विदा भै गेल ।

कंचन—कुमार ! हम कहैत छलहुँ जे ई अहाँक भ्रम मात्र थीक । ओ माता नहि अपितु कारी सर्पिणी छथि । जकरा हृदयमे माताक प्रेमक स्थानमे प्रेयसीक वासनाक आगि लहरैत छलैक, ओ शिकार करय चाहैत छलैक आर अहाँक ओ सुन्दर आँखि छलसँ लए टा लेलक ।

कुणाल—आइ हमरा अपन भ्रमक पुष्ट प्रमाण भेटि गेल, कंचन । हम पूर्ण भ्रममे छलहुँ । आर अहाँक गप्प केँ गौण बुझैत छलहुँ । ओह नारी ! धन्य अछि । सत्ये एकरा छलना कहल गेल छैक । स्मरण अबैत अछि पाटलिपुत्रक राजप्रासाद । जाहि ठाम हम रक्षिताकेँ अपन आँखि देबाक वचन देने रहियैक । आव ओ सत्य बनि प्रकट भ गेल अछि । ओह ! कारी सर्पिणी सदृश्य रक्षिता !

कंचन—कुमार ! एहि गप्पकेँ बढ़ाऊ नहि । एतबहि बूझू जे ई अहाँक भ्रम छल ।

कुणाल—भ्रम ! भ्रम ! भ्रम ! हा...हा...हा...हा...

ओहि प्रकृतिकेँ फूजल पृष्ठपर कुणालक अट्टहास गूँजि उठलैक । जाहिमे छलैक नारीक छलनापर उपेक्षाक परिहास आर पुरुषक भ्रमपर करुणाक अस्फुट शब्द !

गुलाबी गप्प

प्रोफेसर श्रीहरिमोहनभा

ओहि दिन वर्षा भरैत रहैक । हम कलवमे बैसल चाह पिवैत रही । संगी सभ ताश-शतरंज खेलि कऽ अपन अपन घर चलि गेल रहथि । एसकर मे समय काटब अब्बुह बूझि पड़ैत छल । तावत् देखैत छी जे मधुकरजी भटकल आवि रहल छथि ।

मधुकरजी रंगीन लोक । तेहन - तेहन गुलाबी गप्प छोड़ैत छथि जे सुननांहरकेँ रस भेटि जाइत छैन्ह । से आइ एतेक दिन पर मधुकरजीकेँ देखि मन उल्लसित भऽ उठल । कहलिऐन्ह—आउ, आउ, मधुकरजी । भल्लह बेर पर ऐलहुँ । चाह पीवू ।

मधुकरजी अपन टोप ओ बरसाती खूँटी पर टाँगि, चाहक टेबुलपर आवि बैसलाह । हम कहलिऐन्ह—इह ! आइ कतेक दिनपर अहाँकेँ देखल ! अहाँ त आसाममे रहैत छलहुं ? देश कहिया ऐलहुँ ?

मधुकरजी अपन रेशमी रुमाल बहार कय सोनहुला चश्माक सीसा साफ करैत बजलाह—यैह मास दुइएक होइ अछि । आव फेर ओहिठाम जैवो नहि करब ।

हम कहलिऐन्ह—से कियेक ? अहाँकेँ त सुनै छलहुँ जे राजा साहेब हद्दसँ बेसी मानैत छथि । देहो पहिने ललबुन्द छल । आव एकदम सठल लगै छी । बात की छैक ?

मधुकरजी हमर संगतुरिये जकाँ । बयसमे दू चारि वर्ष जेठ छलाह, तथापि संगिर जकाँ गप्प होइत छल । ततेक धाख नहि रहैत छल ।

मधुकरजी एम्हर-ओम्हर तकलन्हि, फेर नहूँ-नहूँ बजलाह—हमरा शरीरकेँ बूझह त ओहिठामक महारानी दुरि कऽ देलन्हि ।

हमहूँ किछु-किछु रसिक लोक । ओहि समय नवयुवक ई गप्प सुनि तेहन कुतुहल जागल जे चाहक प्याली हाथेमे रहि गेल । पुछलिऐन्ह—से की, मधुकरजी ? कनेक खुलासा कहू ।

मधुकरजी चाहक चुसकी लैत बजलाह—खाली चाहे छोड़ कि और किछु मङ्गैबह ?

हम कहलियेन्ह—तुरंत मँगवैत छी । घंटी बजौला उत्तर वेहरा आएल । कहलियेक—चौप, कटलेट, भामलेट वगैरह जो कुछ हो, ले आओ ।

मधुकरजी आव सुभ्यस्त भऽ कऽ बैसि गेलाह । बजलाह—तों त जनिते छह जे हम राजा साहेबक खास मोसाहेबमे छलियेन्ह । शिकार खेलैबामे हमरे बंदूक सभसँ भागाँ रहैत छल । परन्तु...परन्तु...की कहि-ओह ? सभटा कर्मक बात होइ छैक । ओहिठामक महरानी हमरो लाहेब कऽ देलन्हि ।

हमरा मनमे गुदगुदी उठय लागल । कहलियेन्ह—कनेक फरिछा कऽ कहू ? ओहिठामक महरानीकेँ अहाँसँ कोन काज ?

ओ बजलाह—अरे ! से जुनि पूछह । ओ ककरा छोड़ैत छथिन्ह ? हमरे जकाँ कतेको मोसाहेब ओहिठामसँ पड़ा ऐलाह अछि ।

हम चकित होइत पुछलियेन्ह—अहाँ केँ कोना लागि भेल ?

मधुकरजी कहय लगलाह—हौ, एक राति हम अपन डेरामे सूतल रही । गर्मीक समय रहैक । कबाड़ खुजले छोड़ि देलियेक । सनसन बसात चलैत रहैक से उघाड़ देह मे नीक लागय । पुरबैयाक लहरामे जे आँखि लागल से वेसुध भऽ सूति रहलहुँ । जखन आधा रातिकऽ निंद टूटल त देखैत छी जे महरानी छाती पर सवार छथि ।

तावत् वेहरा आबि कऽ टेबुल पर प्लेटक पथार लगा देलक । जखन ओ चलि गेल तखन मधुकरजी चौपमे काँटा गरवैत बजलाह—हौ जी, हम त थरथर काँपय लगलहुँ । छाती धुक्-धुक् करय लागल । मुँहसँ बोल नहि बहराय । पहिने कहियो त एहन अनुभव रहय नहि । हम डरें सकदम भऽ गेलहुँ । देखल जे आव केबाड़ खूजल रहय देब उचित नहि । भीतरसँ बंद कऽ देलियेक । बल्कि सभटा खिड़कीओ लगा देलियेक ।

लाजे हमर देह भुलकय लागल । तथापि साहस कय पुछलियेन्ह—ओ कतेक काल धरि रहलीह ?

मधुकरजी नोन-मरीच बुकनी मिलवैत नहूँ-नहूँ बजलाह—ओ भरि राति रहलीह । भिनसरबी रातिमे जा कऽ जान छोड़लन्हि । ओ गेलीह तखन जा कऽ हमरा होश भेल । ता तऽ हम पसीना-पसीना भय गेल रही भरि रातिक भमारल देह ! एतबो शक्ति नहि बुझि पड़्य जे दठि कऽ घोती पहिरी । पियासे कंठ सुखाइ छल परन्तु तेहन पस्त रही जे पानि पीयाक देखल त ठोर तेहन बुझि पड़ल जेना सभटा रस केओ चूसि नेने हो । ओहि दिन हम घर सँ बहरैबो नहि कैलहुँ ।

हमरा मुँह सँ बहरायल—बाप रे बाप ! एहन जबरदस्त...मधुकरजी पेयाजक कतरा मे सिरका मिलवैत बजलाह—हौ, जबरदस्त कि जबरदस्त सन ! लोक केँ खेला-खेला कऽ मारै छथिन्ह ।

मधुकरजी बजलाह—ककर बापक सक छैक ? ओ जकरा पर लगै छथिन्ह तकरा पानि पिया कऽ छोड़ैत छथिन्ह । शरीरक सभटा सत्त्व खीचि कऽ सिट्टी बना दैत छथिन्ह ।

हम कहलिऐन्ह—परन्तु राजा साहेब...

मधुकरजी बजलाह—राजा साहेब त अपने हुनका डरेँ छीह कटैत भेल फिरै छथि । जहाँ एक बेर महारानी धरैत छथिन्ह त 'बाप-बाप' करय लगै छथि । तेना कऽ बजारइ छथिन्ह जे उठ नहि होइत छैन्ह ।

हम गुम्म भऽ गेलहुँ । मधुकरजी कटलेट कटैत बजलाह—तोरा आश्चर्य होइत छौइ ? तखन ओहि देशमे जा कऽ स्वयं देखि आवह गऽ यदि ओ महारानी लगलथुन्ह त फेर जल्दी निस्तार नहि । ओ बड़का-बड़का पहलमानक धोधि सटका दैत छथिन्ह ।

हम लुब्ध होइत कहलिऐन्ह—तखन हुनका राक्षसी बुझक चाही । नहि, एहन देशमे नहि जैवाक चाही ।

मधुकरजी आमलेट खोँटैत बजलाह—तैँ त हम ओहिठामसँ पड़ा ऐलहुँ । नहि त हमरा कोन वातक कम्मी छल ? दूध, दही, घी, मलाई—जतबा जे खाइ, सभटा दरबारसँ भेटैत छल । परन्तु ओ सभटा सोखत भऽ जायत छल । किएक त महारानी नित्य राति कऽ पहुँचि जाइत छलीह ?

हम पुछलिऐन्ह—अहाँ केबाड़ कि क ने बन्द कऽ लैत छलहुँ ?

ओ बजलाह—धुर बताह ! ओ महारानी केबाड़ बंद कैने मानय-वाली थिकीह ? तोँ बच्चा जकाँ बजैत छह !

हम कनक संकुचित होइत पुछलियेन्ह—ओ कतेक दिन धरि अबैत रहलीह ?

मधुकरजी आगलेट निशेव करैत बजलाह—कोनो मधुर नहि भंगैबह ?

हम तुरन्त घंटी बजाओल । बेहरा आगत । हम कहलियेक—बदियो-बदियो भिठाइ ले आओ ।

मधुकरजी निर्बिकार भावसँ पुनः अपन कथा कहय लगलाह—करीब छौ मास धरि ओ अबैत रहलीह । पहिने त ठीक बारह बजे राति कऽ आबथि हमर घड़ी देखि कऽ बुझि जाह आब ओ ओलीह । परन्तु पछाति कऽ कोनो नियम नहि रहलैन्ह । एके दिनमे दू-दू बेर कऽ आबय लागि गेलीह । हम लाख यत्न कैल, परन्तु ओ हमरा नहि छोड़लन्हि । जखन एकदम्म खियाय लगलहुँ तखन एकदिन आबसर पाबि चुपचाप घसकि ऐलहुँ । आब कान ऐठैली जे फेर ओहिठाम जैबाक नाम ली ।

तावत् टेबुल पर रसगुल्ला, फ्रीम - चॉप, रसमलाइ ओ आइसक्रीम इत्यादिक पथार लागि गेल । मधुकरजी ओहिमे डूबि गेलाह ।

हम किंचित् धखाइत पुछलियेन्ह—मधुकरजी; एकटा बात पूछ ? महारानीक वयस की हैतेन्ह ?

मधुकरजी अन्तिम रसगुल्ला मुँहमे दैत विस्फारित नेत्रसँ हमर मुँह ताकय लगलाह । बजलाह—एकर अर्थ नहि लागल । तोहर आशय की ?

हम कहलियेन्ह—यैह पुछैली जे रानी साहिबा कै वर्षक हैतीह ?

मधुकरजी ठठाकऽ हँसि पड़लाह । ततेक जोरसँ टेबुलपर हाथ पटकलन्हि जे प्लेट सभ भनभना उठल । पुनः बजलाह—तों की सँ की बुझि लेलह ! रानी साहिबाकेँ त हम कहियो देखनहु नहि छियेन्ह । ओ कि साधारण लोकक सोझाँ होइ छथिन्ह ?

हम विस्मित होइत पुछलियेन्ह—तखन अहाँ एतीकाससँ जे महारानी कऽ कहैत ऐलहुँ अछि ?

मधुकरजी, पुनः अट्टहास करैत बजला—हौ बुद्धिनिधान ! ओ महारानी मलेरिया थिकोह । जहिना कमला-कोशी क्षेत्रमे, तहिना आसाममे अपितु ओहूसँ बेसी । एतबो बुझबामे नहि ऐलौह ?

हम अवाक् रहि गेलहुँ । कहलियेन्ह—तखन अहाँ ओतेक राखे बात बनाकऽ कियेक कहलहुँ जे ओ चुपचाप पहुँचि जाइत छलीह, पस्त कऽ दैत छलोह, पानि पिया कऽ छोड़ैत छलीह, घामे पसीना चुआ दैत छलीह ।

मधुकरजी तौलियासँ हाथ पोछैत बजलाह—त एहिमे फूसि की कहलिऔह ? मलेरियामे त ई सभ हैवे करइ छैक ।

हम कहलिऐन्ह— परन्तु अहाँ त आर बहुत बात सभ कहलहुँ अछि ।

मधुकरजी सौँफ चिबबैत बजलाह—हम एकोटा बात एहन नहि कहलिऔह अछि जे मलेरिया महरानीक विषयमे नहि होइन्ह तोँ मिलाकऽ देखि लैह ।

हम कहलिऐन्ह—धन्य छी, मधुकरजी ! अहाँत गोनूझावाला परि कैल । पहिनहि सोझ मलेरियाक नाम किएक नहि कहि देलहुँ ?

मधुकरजी बजलाह—हम कि जानय गेलहुँ जे तों साहित्यक विद्यार्थी भय एतबो अलंकार नहि बुझवह ? परन्तु दौजी ! तों लक्षार्थ नहिवुझलह से एक तरहें नीके भेल ।

हम पुनः मुँह तकैत पुछलिऐन्ह— से की ?

मधुकरजी कनेक मुसुकाइत बजलाह—देखै छ ने ? ओही 'महरानी'क कृपासँ एतेक रासे प्लेटक पथार एहिठाम लागि गेल । यदि सोझ-सोझ 'मलेरिया' कहि देने रहितिऔह त तों एतबा सामग्री मँगवितह ?

ई कहि मधुकरजी एक बेर तृप्तिसूचक देकार कैलन्हि आर तदुप-रान्त अपन बरसाती ओ टोप उठा, हमरा धन्यवाद दैत बिदा भऽ गेलाह ।

गीति

श्री'इन्दु'

अगजगकेर पग-पग पर कठिन बहन सुधिक भार ।

आकुल मन-प्राण भेल
नोरव सखि गान भेल
सुधि-मग पग मंथर धै
कनिक क्षणिक ध्यान भेल
जागि पड़ल चिर सुषुप्त
स्नेहातुर सुधि उदार ।

सुस्मृति - घन उमड़ि पड़ल
पारचयमय सरल तरल
बरसि पड़ल हृदय बीच
अचिर अमित अमिय भरल
प्राण मे प्रवाहित नित
भेल पुन. प्रणय - धार ।

जागृत - दृग - स्वप्न वरण
सत्य भेल पुनर्मिलन
सुधिकेर उपचार विरह
सिद्ध करै जन्म - मरण

शूली पर प्रियक सेज प्रसुदित शयनोपचार ।

श्रीरामचन्द्रभो 'सुमन'

सतमाय

एक दिन जखन चन्दर स्कूल सँ आयल तऽ पड़ोसिन के कहैत
सुनलक जे - जखन सतमाय राजा रामचन्द्र केँ नहि भेलैन त
एहि दुगर के की हेतैक । एहि स त बढ़ियाँ यैह होइतैक जे वकील
साहेब एकरा जनमैते नोन चटा दितथिन ।

अन्तमे हारि कऽ वकील साहेबकेँ दोसर विवाह करऽ पड़लैन । इच्छा रहनि
या नहि से तऽ वैह जानथि परंच लोककेँ कहलखीन जे एकटा दुगर नेनाक
देख-भाल करैक हेतु विआह करऽ पड़ल ।

चन्दर आइ बड़ प्रसन्न छल । अपन संगी - तुरिया सबकेँ तोतराइत कहने
फिरै जे आव हमरो माय आओत । पालकी पर चढ़ि कऽ । हमरा लेल लड्डू
आनत, तोरा सबके नहि देबौक ।

चन्दरक संगी-तुरिया सभ ललचाइत नजरि संऽ ओकरा देखैत जाहिमे यैह
निवेदन निहित छल जे एक टुकड़ी मधुर हमरो दिहऽ ।

परञ्च चन्दर तऽ अपना धुनि मे भूमि रहल छल । आव ओकरा कोन
फिकिर ? आव की ओ अनकर आँगन जाय खेलाइक लेल । ओकर अपन
माय औतेक, कोरा मे बैसाक दूध-भात खोओतैक, गीत गाबि :

‘आरे चन्ना आऽ आऽ

केरा के भार ला, रस कुसियार ला ॥’

चन्दरक नबकी माय एलखीन । ओहो धूरा मे लेपटायल जाक अपन नबकी
माय स लपटि गेल, परञ्च ओकरा भेटलैक कोराक बदला मे फटकार- छीः
हटि क ठाढ़ रहऽ, साड़ी खराब भऽ जायत ।

चन्दर एकटक अपना नबकी माय केँ देखऽ लागल । ओ विचारलक—श्याम,
धूरा मे लेटायल अबै छैक तऽ ओकर माय उठाक कोरा मे लैत छैक, हमरा
माय कियैक ने लेलक ।

चन्दर कानय लागल । बकील साहेब गपसि कऽ बेदा केँ कोर कऽ उठा लेलैन
परस्र लाख दुलार केला पर चन्दरक हृदयक आतंक दूर नहि भेल ।

समयक संगे संग चन्दरक वयस बढ़ल गेल आर आब ओ सातम वर्गक
विद्यार्थी छल ।

चन्दर कौं पि उठल । तऽ कि लोकक कहनाइ सत्य भ जेतैक । हमरा तऽ ठीके
माय हरदम डटैत रहै छथि, हरदम कोनो ने कोनो बात बाबू केँ कहिये दैत
छथिन । आर आब की बाबूओ पहिने जकाँ मानै छथि । आब त ने ओ
विसकुट अबैए ने ओ दुलार भेटैए ।

चन्दरक आँखि भरि आयल । ओ बुकौर पाड़ि कऽ कानय लागल ।

ओ चिकरि उठल—माय तों कतऽ छै । हमरा अपने लग लऽ चलने —
खोईरी गाछी मे । कर्कश शब्द मे उत्तर आयल ।

कहै छैक जे 'अपने धौंछिया मरल आर एकटा काल छोड़ने गेल' 'घाटा दुअर
बनैआ सुगर' । बुझलियौ तऽ जे बड़ सतवर्तीक दुलरुआ छै । उठ, जाक
बच्चा केँ खेला गऽ ने त से ऐंड देबौक जे एहीठाम टन्न दऽ रहि जेवें ।

चन्दर कनैत उठल । नोर पोछि लेलक । बच्चा केँ उठा क दरबज्जा दिश
चल गेल ।

ओकर सब आशा पर पानि फिरि गेलैक । ओ सोचऽ लागल—माय हमरा
कियैक डाँटय । बाबूओ त आब खाली मारिते रहै छथि । इन्दर केँ दुलार
करै छथिन, हमरा दिश त देखबो ने करै छथि । आब त ने नीक कमीज भेटैए
ने खेलोना, आर आई धरि केयो जलखइयो नहि देलक ।

एतवे मे टहलनी ओकरा लग मे आवि कऽ ठाढ़ भ गेलैक । ओहि वृद्धाक
आँखि नोर स भरल छल आर हाथ मे सूखल मड़ुआक रोटीक टुकरी ।
ओ टुकरी चन्दर केँ द देलकैक आर कहलकैक—खा ले, बच्चा ! कानऽ
नहि, भगवान के कहुन, वैह सबहक दिन घुरौनिहार छथि ।

एतवे मे चन्दरक सतमाय केर गर्जन सुनाइ देलक - गेऽ दुर्गा माय, ओतऽ
कोन वितंडी छटै छै । आब दहुन मालिक के । सब शेखी बहरा जेतौक, तोंही
बहसबै छिही छौंड़ा केँ । ईह, बड़ आवेशमनि बनली हे कहै छै किदन । तेकरे
परि 'धिया-पूता ककरो, घिढ़ारी करै मंगरो' ।

सौमस्वन जस्वन बकील साहेब पैलाह तड गृहणी सौन मियचाइ लग्गाक पयवटा
विषय कहलखीन । चन्दर पर बेंत क बपी भेल । ओकर अंग - अंग फुटि
गेलैक तैयो बकील साहेबक बेंत चलिते रहल ।

चन्दरक जीवन तुर्भर भ गेल । जाहि बन्दाक जन्म पर बकील साहेब
ओतेक प्रसन्न छलाह, जे हुनकर सबसँ प्रिय छल, तेकर ई वृथा ।

चन्दर ओहि ठाम सँ नैगड़ाइत छल । जा क अपना स्वर्गीया माइक फोटो
लग ठाढ़ भ गेल । गैह फोटो ओकर जीवनक आसरा छलैक ।

ओ हुचुकि हुचुकि कऽ कानय लागल । माथ हमरा अपने लग ल चल । आव
हमरा जीबैक मोन नहि होइछ ।

विधाता क विधान विचित्रे होइ छैन्ह । जे नारी जननीक रूपमे ओतेक
दयामयी ममतामयी होइत छथि, बैह आनक धिया-पूताक लेल चंडालिनी !!

ई एहिमे समाजक दोष आकि विधाताक विधान ।

समय बितैत गेल । चन्दरक जीवन भार भ गेल । ओकर मायक एक मात्र
चेन्ह फोटो अग्निदेवक भोजन बनल । ओकर सब अधिकार छीनि लेल
गेलैन्ह । एहना अवस्थामे ओहि अभागलक हृदय विदीर्ण कोना ने होइतैक !
ओ दुखित पड़ि गेल ।

एक सौ तीन डिग्री ज्वर । ओछाओन पर तड़पै न ककरो आँखिक लाल, किन्तु
केओ देखनाहर नहि । ओकील साहेब केँ लेल धन-सन । नोकर चाकर तऽ
नबकी मलिकानिक दास । केकरा गरज पड़ल रहै जे ओहि दुगर केँ पूछि-
तैक जे कि भेलौहे आर की चाहियौ, चन्दर ज्वर सँ तड़पि रहल छल
आर दोसर घर मे ओकर भाय पढ़ैत रहैक —

‘माता यस्य गृहे नास्ति

भार्या चऽ अप्रियवादिनी

अरण्यं तेन गन्तव्यं

यथा अरण्यं तथा गृहम्’

पानि ..पानि...पानि...चन्दर चिकरल ! ओम्हर सँ शब्द पलैक—जे
जनमेलकौ, तकरा खोऽ । मरिओ जो ने ! तोरा लक की पूजा हेतैक ।.....
हमरा अपने चारिटा बेटा अछि, ईह

चन्दर अपने सऽ उठल थरथराइत हाथे पानि पीलक आर फेरि आवि कऽ सुति रहल ।

साँझवन जखन ओकिल साहेब ऐलाह तऽ हुनका लग शिकायतक ढेर लागि गेल । गृहिणी कनैत कहलखीन—हे, आव अहाँक दुलरुए आव घर मे रहत की हमहीं । ओ हमरा अवाच्य कथा कहलक । अहाँक अछैत हमरा ओ बात कहत ?

ओकील साहेबक पारा सातम अकास पर पहुँच चुकल छल । ओ गरजैत बजलाह—ओहि दुगरा के ई साहस जे अहाँ के कथा कहै..... एखने घर सँ निकालि दैत छियैक ।

चन्दर केँ आवि कऽ कहलखीन—कुलकलंकी निकलि जो हमरा घर सऽ । जत जाइक मन होऊ तत चल जो । हमरा लेखेँ मरि गेलौं तों । ई कहैत ज्वरीय चन्दर पर बेंतक वर्षा, होमय लागल ।

चन्दर चल गेल.....कतऽ गेल से ने केयो खोज केलकैक ने केयो बुझलक ...

दस वर्षक बाद !!

एकटा हाकिम टुटल घर लग उतरल । गाम मे हुल्लड़ि मचि गेल, मजिस्टर आयल छैक ।

ओहि टुटल-फुटल आँगन मे छलीह एकटा विधवा ! ओ युवक आवि कऽ हुनका लग ठाढ़ भ गेल । विधवा चकित छलीह । हुनका बकार नहि फूटलैन 'माय ! अहाँ हमरा नहि चिनहलौं'—ई कहैत युवक हुनका पैर पर अपन मूड़ी राखि देलक ।

'ब...चा' । विधवा बजलीह ।

जनसमूह चिकरि उठल—'चन्दर' !!!

हँ, हमहीं चन्दर छी । बड़ जल्दी हमरा विसरि जाइ गेलौं ।

विधवा कपैत बजलीह—बच्चा, हम बड़ अभागलि छी । हम त अहाँ लग मुँहों देखेबाक योग्य नहि छी । हमरा क्षमा करू । ई कहि ओ चन्दरक पैर पर खसि पड़लीह । चन्दर हुनका भरि पाँजक उठवैत, बाजल—माय ! ई अहाँ की करै छी । सभटा हमर कर्मक दोष छल । अहाँ हमर माय थिकौक; हम अहाँक बेटा । एना जुनि करी ।

विधवाक आंखि सँ नोर भरय लागल ।

के जाने ओ आनन्दक नोर छल या अपन करनीपर पश्चात्ताप !!

सूतक महत्व

श्रीचन्द्रावतीम्ना

गुरुजी सूत लय करैत छथि भगड़ा,
इएह थिक हुनक दिनचर्या।

एहि सूतसँ हुनक अछि मान,
एहि बात परटेरि रहल छथि तान।

एही सूत सँ हुनक उतरत मान,
एतबो तक हुनका नहि छनि ज्ञान।

एही सूत सँ भाँपल छनि अंग,
एहि सूत लय करबनि भंग।

छात्र - गण के छनि बड़ रोष,
एहि सूत लय रखबनि तोष।

इएह सूत थिक हमर आधार,
एहि सँ होयत बड़ उपकार।

एहि सूत पर राखब दृष्ट,
इएह थिक हमर जीवन क वृत्त।

सूत - सूत कहि करब अन्त,
इएह थिक हमर वसनक यन्त्र।

देखल आजु हम भोरक तारा

श्रीकल्पनाशरण

देखल आजु हम भोरक तारा
एकसरि मांझ अकास
यामिनी तेजल, चन्ना छिट कल
तेजल सखी समाज ॥१॥
ननुआ आनन भेल उदास
स्वजन केयो नहि आयल पास
हारि घयल एक नूतन बाट
चलि भेलि जेना नभसागरक घाट ॥२॥
सागर कात ठाढ़ि उषादाइ
बहियाँ लेलन्हि पसारि
ननुआ आनन बूकहिं सटाओल
आंचरक देलि ओहार
दुइ मिलि रंगि गेल एकहि रंगमे
गगनक छोर भेल आल
विकसित भेल रवि भाल
दृश्य मनोरम हिय हारा
सुदा, नयन बहय मोर दुइधारा ॥३॥
देखल आजु हम भोरकतारा

शिशिर

आचार्य पण्डितश्रीआनन्दभा

सन सन करइछ भीषण समीर ।
जे शिशिर नृपक अप्रतिमवीर ॥
सन सन करइछ भीषण समीर

प्रकृतिक कणकण पर आधिपत्य
जेहि कोर जाड़ कीड़ए अपत्य
ई केहन उकाठी राजपुत्र ?
मूतए डर जेहि नहि ककर पुत्र ?

थावर जङ्गम अछि समान
जाड़ै प्रतिपल कत परेशान ?
कँपइछ केरा भालरि डोलाए
प्रातहि तरुदल नारै नहाए

वह वटक जटापथ अश्रुवारि
देअए मैना शुक मारि गारि ।
कन्टकित जाड़स अछि गुलाब
श्रीफलहुँक थिति अछि सैह आव ॥

जत वैर खैर ओ सैनि गाछ
ववऊर करौना नेबओ काछ ?
दाड़िम आदिक सभ रोम ठाढ़
देखू जाड़क रङ केहन गाढ़ ?

पाला-पाला पड़ि नष्ट भेलि
हा कमलिनि सरवर बीच हेलि
भाँटा सजमनि मरिचाइ मूर
मेंथी गाजर आर्द्रक कचूर ॥

कोबी आलू सबहीँक आँखि
अछि डब डबैल कत नोर राखि
फाटल जाड़ै अकठोर ठोर
ओ कोमल स्वच्छ कपोल गोर ॥

कटकट करइत अछि शुभ्र दाँत
जे लगइछ चलइत कुन्द पाँत ।
कत जनकाँ फाटल कतवे माए
चलि सक नहिं जहिसँ पद जमाए ॥

सुतइछ जन मुख सँ जोड़ि जानु
उठि उठि तापए पुनि चित्रभानु
धरतीक वक्षपर तुहिन पात
लगइछ कुष्ठै जनु धवल गात्र

सूरो छथि लड़िकँ भेल मात
धोन्हक चहरि ओढ़थि परात ।
भरि राति करै अछि चीतकार
जाड़ै बानर हा सपरिवार ॥

कुकुर नहि छाउड़ ढेरि बैसि
सक जाड़ हटा पुनि घरहुँ पैसि ।
पैरक दिस ओढ़ना तरविलाड़ि
बसि ओने शान्ति पंखइछ खेलाड़ि

चों चों करइछ सभ पक्षिशाव
जन नीक पाखि तर भटिनि आव
पक्षी ने जाए चाहए बहार
यद्यपि शिशु कानए बिनु अहार ॥

मरइछ जाइ जे बूढ़ि गाए तिलकोड़ बाल केर हो तराइ
 सङ्ग दैछ तकर पुनि बुढ़ि माए चाटथिं बाबू रवड़ी मलाइ ।
 सङ्गदैछ तकर पुनि बूढ़ बाप अङ्ग अङ्ग कटु तैलक पुनि मलाइ
 कत वर्णक शिशिरक प्रबल पाप ॥ तोसक देखइछ औरो मलाइ
 धनमद सँ मातल किछु अमीर अछि पेट गरीबक भूख जाइ
 केवल अपना लए छथि अधीर । तहिपर बीतल रातुक पहाड़ ।
 बनबौल बृहत्तर निज तुराइ घुसि आएत निर्धन जहि पोआर
 नहिं दीप हेतु करुणाक राइ ॥ लीखल अछि सेहो की कपार

सन सन करइछ भीषण समीर
 जे शिशिर नृपक अप्रतिम वीर
 सन सन करइछ भीषण समीर । †

जखन अपने

मांगि कै खाइ नहि छी

मांगि कै कपड़ा नहि पहिरै छी

मांगि कै बस, ट्राम वा रेल पर नहि चढ़ै छी

वा विनु भाड़ा देने कोनो मकानमे नहि रहै छी तँ किएक

मांगि कै केवल पोथी-पत्रिका सभ पढ़ै छी ?

की अपनेक सहयोगक अभावमे ई 'वैदेही' एकमात्र सर्वोत्तम ओ सुन्दर मासिक पत्रिकाक प्रकाशन बन्दे भै जाय । मास भरिमे केवल १) वा २५ नवका पैसा प्रार्थित अछि । अपन पछिला चन्दा शीघ्र पठाऊ ।

मिथिलाक नारी

श्रीकोमलकान्तभा 'कुन्द'

रेलवे स्टेशन !

छम् ... छम् ... छम् ... ।

बाबू, कनी फोल् । हमरा सभकेँ कनेक बैसए दिय । एकदम दुःखित स्वर,
भानू जेना शब्द नहि 'आह' हो, आह !

खट, खट, खट ।

बाबू कनी फोल् । आन कोनो कोठलीमे जगह नहि छैक । हम सभ ठामसँ
छूमि अएलहुँ अछि ।

आब हमरा सहि नहि गेल । हम उठि कए देखैत छी जे एक २२ वर्षक देहाती
युवक । संगमे एक षोड़स वर्षीयाकेँ नेने ठाढ़ अओर प्रताप्ता कए रहल छथि
जे जँ केवाड़ फूजए तँ बैसीः । हुनका देखब छल की हमर मोन तँ की सँ भऽ
गेल । आँखि तँ देखैत रहल हुनका सभक दिश मुदा मोन ! ओ तँ भरिसक
ओतए चल गेल जकरा कि साधारण आँखिक कोन कथा सर्वशक्तिमान
दूर्वीक्षण यंत्रो नहि देखि सकैछ । कारण ओ छैक दूर, अति दूर जतए कि
पाप नहि छैक ।

स्वार्थक अर्थ दैहिक प्रयोजन नहि छैक वरन् आत्मिकसँ छैक, मोह नहि छैक,
अममता नहि छैक, अओर नहि छैक अंध-विश्वास एवं ककरो पराजित कऽ
कए रखवाक परम्परा !

दूरीक कारणें साधारण वस्तु तँ ओकरा नहि देखैत छैक, अओर केयो यदि
देखतो छैक तँ वो अछि मोन मुदा । मोनो ओकर एक अस्पष्ट चित्र मात्र
देखैत छैक । अओर ओहिठाम हमर मोन पहुँचि गेल एवं ओकरो उपराग
देमए गेल जकर राजमे की एकक शोनितक दोसरक जूतामे पालिस होइत
छैक । एकक शरीर दोसरक मोटरक लेल रास्ताक काज करैत अछि । फुटपाथ
पर पड़ल मानवता मोटरमे बैसल मानवता सँ हृदयालिंगन कए चाहैत छैक
मुदा मोटरक मानवता ओकरा नहि हृदय लगवैत छैक, कारण ओ दानवताक
पहराक अन्दरमे पड़ल रहैत छैक । जतए खाधि छैक भील सभ सन एक
दोसका बीचमे । अओर इएह उपराग देमए गेल हमर मोन कि गद्दी पर
बैसल लोककेँ ई भान कियेक नहि होइछ जे जकरा हम नीच बुझैत छियैक
वा जकरा हम अपन कनेक सुविधाक लेल सत्यानाश कए दैत छियैक, तकरो
हृदयमे हमरे सन आत्मा छैक एवं हमरे जकाँ कष्ट होइत छैक । मुदा

उपराग दऽ नहि सकल ओहि राजाकेँ कारण तखने एक कठोर शब्द सुनि हमर मोन दूटि गेल अओर ध्यान दूटल तँ देखैत छी जे युवती वेश झूकि कऽ ठाढ़ नहि यद्यपि कि पाएर तक घोंघ ठेकौने छथिए ताहि पर अपमान पवैत छथि ।

‘दूने थिकैक, गाम नहि जे खुट्टा सन भेल ठाढ़ि छी, कने झुकियो तँ जाऊ ।’ अओर देखल युवतीकेँ एहि परम्पराक कारणें जकरा कि मिथिलाक आदर्श कहल जाइछ, धनुष जेकाँ होमए पड़लैन्ह । हम केवाड़ फोलल । दूनू गोटएकेँ अन्दर अएलाक बाद केवाड़ बन्द कएल एवं अपना स्थान पर दूनूकेँ बैसाए देल ।

एतवा देखव छल कि सरदारजी जे की कोठलीमे बैसल छलाह, अपन मोटरी घुसकवैत हमरा बैसवाक इशारा कए पुनः अपना विवादमे मस्त भए गेलाह । विवाद स्त्री-स्वामीमे बड़ी कालसँ चलि रहल छल । मुदा बात नहि वृम्भि सकलियैक कारण भाषा पंजाबी छल, तथापि ई स्पष्ट जे तर्क लऽ कऽ एक दोसराकेँ हटावए चाहए मुदा व्यर्थ ।

सहसा गाड़ी बेजान दौड़क लेल ससरल एवं देखितहि गाड़ी खूब जोरसँ पड़ाए लागल एवं ओकरा पाछू सड़कक कातमे गाड़ल पाथरक खुट्टा सभ ओहिना झूटल जाए जेना समयक पाछू संसार ।

युवती ओझराए गेलीह कारण हवाक जे मादकता से ओना तँ सभक प्रभावित कएने छल मुदा हुनका विशेष मस्त बनाए देने छल कारण हुनक वयसे छल १६ वर्षक कि ने । मुदा तखनहि कनेक आँचर उपर ससरि गेल, यद्यपि कि कोनो अंग उघाड़ नहि भेल । लेकिन उएह कर्कश शब्द पुनः सुनवामे आएल । ‘दूने थिकैक । लोक चिन्हार नहि अछि तँ कि नङ्गे भऽ जाएव ।’ युवती घोंघकेँ माटिमे सटाए देल, अओर घोंघक नुआ जे कखनहु सनहमे भीरए एवं हवाक कारणेँ कखनहुकेँ कनेक उठए कि लागए जेना धरती माँ सँ कहि रहल हो-इह ! माँ कि तोरामे ओ शक्ति नहि जे तूँ एक एहेन पुत्रकेँ जन्म देव जे मिथिलाक निरीह नारी समाजकेँ हमरा बन्दी सँ छोड़ा सकए एवं ओकरा संसारकेँ देखवाक क्षमता आँखिमे दऽ सकए ।

हम ई सोचल जे घोंघ एतेक त्यागि जखन अछिए जे ओकरा छोड़क लेल तैयार अछि तँ कियाएक नहि छोड़ि दैत छैक, मुदा फेर सामने आएल जे ओ की करत ओ तँ अन्ध-विश्वास एवं झूठ आदर्शक नोकर थीक एवं ठीक ओहिना ओकर आज्ञाक पालन करैत अछि जेना एक वास्तविक नोन खाए-बलाकेँ करक चाही कारण अछि तँ ओ एक आदर्श चरित्र कि ने ।

बलि ज्ञानक अनुसार मानवके बांटबाक क्षमता रखैत तँ दोसर अपना आँखिके ओहिकातसँ एहि कात घुमाकए ओकरा सामने जे घोघमे तानी भरनीसँ जे घर बनल छैक, तकरा नहि ओना तँ बीस-बीसक हिसाबसँ गनैक क्षमता धरि भरिसक अवश्य रखैत छल होएतीह । अओर दूनू छलीह भार-तहिखन मोन सरदारजीक विवाद पर गेल । इम्हर सरदारजीक स्त्री जतए अपना तर्कसँ स्वामीके परास्त करएमे व्यस्त ओतए ओ युवती अपन संगक पुरुषक आज्ञा-पालनमे व्यस्त । जतए एक स्वामीके हड़एबाक लेल चिन्तित ओतए दोसर घोघ उघड़ि नहि जाए तकरा लेल चिन्तित । एक जतए वृत्त जकाँ ठाढ़ रहि हवाक झोंकक सामनाक क्षमता रखैत, ओतए दोसर लत्ती-जकाँ बिना आसराक ठाढ़ो होएबाक क्षमता नहि रखैत । एक जतए संसारमे तक नारी एवं तेँ दूनूमे भारतीयताक कतेक समावेश छल से अवश्य देखवा योग्य छल ।

गाड़ी तँ पृथ्वी छल नहि जे चलिते रहैत तेँ ओ आव स्टेशन पर रुकल एवं सरदारजी अपना वस्तु - जातक संग उतरि गेलाह । आव कोठलीमे बहुत जगह छलैक तेँ हम पड़ि रहलहुँ से बात नहि किन्तु प्रायः २-३ रातिसँ जागले रही । पड़ैत छी कि मोनमे आएल—

आह ! मिथिलाक नारी ! ओतेक मैलमे रहैत छथि ! जन्म लइते सभ सँ अपवित्र एवं मैल कपड़ा जे होइछ ताहीमे राखल जाइत छथि ! मुदा तेँ की ? तइयो हिनक जे सुन्दरता से केहेन दर्शनीय होइछ, मानू जेना गनौरामे लाल नुकएल हो । अओर ई सोचिते नहि जानि कखन सूति रहलहुँ ।

जखन निन्न टूटल त पता लागल जे ई समस्तीपुर थिकैक एवं बड़ो काल सँ गाड़ी ठाढ़ छैक, मुदा फुजबाक बेर भए गेल छैक । गाड़ी सिटी दऽ देलकैक तथा चलए लागल । मुदा हे भगवान ! ई बेचारे कतए गेलाह । ध्यान आएल जे ई बेचारे कोनो कोज सँ बाहर गेल होएताह । मुदा आव की होएत ? ओ तँ भरिसक बाहरे छूटि गेलाह । लहेरियासराय गाड़ी फास्ट-पैसेंजर भऽ गेलाक कारणे रुकत नहि । ई कतए गेलाह, की ओहिठाम त ने छूटि गेलाह ! ई सोचिते छी कि मंद-मंद हिचुकीक शब्द सुनऽमे आएल । अर्थ लागवमे देरी नहि भेल । मिथिलाक स्त्रीगण भरिसके कहियो गाड़ी देखने होएतीह ? संगी छूटि गेलथिन्ह अछि तखन की हालत हो । अओर ताहूमे रातुक समय एवं कोठलीमे हमहीं टा दोसर ।

हमरा नहि रहि भेल । हम हुनका संबोधित कए धैर्य देबए लगलिअन्हि । कहलियन्हि—की कनैत छी ? एसगर छी तेँ की भेल ? एसगर एक पंजाबीके बंगाली वा अन्य प्रांतवलाक स्त्रीगणके देखू तँ एसगरे दिल्लीसँ कलकत्ता वा ई कहू जे हजार-हजार माइलक एसगरे यात्रा करैत अछि मुदा एकछी अहाँ ?

आ' एक होइत छथि मिथिलाक स्त्री जे शायद घरोसँ एसगर बहरेबाक साहससँ युक्त नहि होइत छथि । जतए दोसर प्रांतक स्त्रीगण देशकेँ चलए-बाक क्षमतावाली सभ होइत छथि ओहिठाम हमरा ओहिठामक स्त्रीगण सभ भरिसक यदि घर चलएबाक वा ई कहू जे भानस कऽ धऽकेँ खुआ देबाक क्षमता मातृकेँ प्राप्त कए अपनाकेँ धन्य बुझैत छथि तँ कोनो अत्युक्ति नहि । दोसर प्रांतक स्त्री जतए देश-विदेश घुमैत अछि, लोकसँ राजनीति वा अन्य समस्याक समाधान करैत अछि ओतए हमरा ओहिठामक स्त्री घोघ तरसँ मुँहो निकालब पाप बुझैत छथि । इएहटा कारण थीक जे हमर मिथिला आइ सभ सँ पिछड़ल अछि जे मिथिला हमर कहियो देशक गुरु छल ओ आइ सभ सँ पिछड़ल अछि । हमरा सभ देखैत छी जे गुरु गुड़े रहलाह एवं चेला सभ चीनी भऽ गेलाह अछि । मुदा तइयो ई मोनमे नहि होइत अछि जे हमहुँ सभ गुरुक संतान छी तँ कियाएक ने चिन्नी वनी जखन की गुड़ बनलै छी । मुदा एहिमे अछि आवश्यकता जे कराही दऽ देल जाएव । मुदा से करैत अछि के ? जतए बैसल ठाम कुकुर जकाँ लोकक पेट पुरुखेक कमाइ पर तथा नाम बेचि भरि जाइत छैक ओतए सभ एवं कष्ट उठए-बाक कोन काज ? यदि कियो बढ़ितो अछि तँ ओकरा पर सभ हसैत छैक, कलंक लगवैत छैक एवं ओकरा अजाति कहि समाजसँ निकालि दैत छैक । एहिमे यदि केयो पुरुष एकरो सभकेँ सहि बढ़ि जाइत छथि अओर चिन्नी बनि जाइत छथि तँ हुनका लोक घमंडी आदिक संज्ञा दए सम्मानित करैत छैनह । मुदा संसार आगू-द्रुतगतिसँ जा रइल अछि । हमहुँ सभ आव पाछू नहि रहि सकैत छी, कारण वायु प्रतिकूल चलब असंभव । मुदा पुरुष समाज जँ चिन्निए भरि जेताह तँ की ? आधा तँ स्त्रीक भाग गुड़े रहत । मुदा नहि आव अहूँ सभ पराश्रित नहि रहि अपना पाएर पर ठाढ़ होएब सोखू, साहस करू । अहीँ एक दिन सभकिलु कए सकैन छी । कनैत छी कियाएक ? चूप रहू । हमरा भाय वृष्णि हमरा कहू; हम गाम पहुँचा दैत छी । कहू कोन गाम जएवाक अछि ? कोन स्टेशन उतरब ? मुदा ओ चुप्पे रहलीह । लेकिन कानब धरि अवश्ये वंद भऽ गेलैन्ह । हमरा अपन सफलता साहस देलक एवं हम पुछलियन्हि ।

कहू कोन गाम, कोन स्टेशन ? यदि ओ नहि अओताह तँ हम पहुँचा देब । घोघ हिलल मुदा गप्प नहि बहार भेल ।

पुनः हम—भाय ! सँ बजैत लाज होइछ । हम-अहाँ एक प्रांतक, नहि ? कहू तँ एक क्षेत्रक रहनिहार एवं हमरा सँ लाज ।

पुनः किलु सफलता भेटल । फसफुसाहट भेल ।

हम—स्पष्ट कहू कोन गाम जाएब ?

ओ—मेंहथ—लोहना टीसन...

हम—तखन तँ कोनो विशेष चिन्ता नहि । हम भंभारपुर उतरव । ओहिठाम हमर गोड़ी आएल होएत । अहाँकेँ चढ़ा देव । अहाँकेँ घर पहुँचाए हम घर हड़री चल जाएब ।

हड़रीक नाम सुनितहि एक विशेष प्रकारक कंपन भेल । बुझा पड़ल ओ प्रसन्नताक छल ।

ओ—ओ हमर पिसियौत बहिनि कछबीमे अछि, तकरो विवाह परुकाँ हरड़ीए भेलैक अछि । की अहाँ जनैत छियैक ?

हम—हँ, अनकर दऽ तऽ नहि जनैत छियैक मुदा हमर विवाह परुकाँ कछबी हरिहर बाबूक ओहिठाम भेल अछि ।

घोघ उठि गेल एवं एक चन्द्रमा मानू मेघ सँ छलकि गेल हो । हमर आँखि चोन्हरा गेल ।

ओ—की कनेयांक नाम की थिकैक ?

हम—प्रेमलता । मुदा लोकमे प्रचलित अछि प्रेमा ।

ओ—के ओम्हा ? भगवान् ! अहाँ धन्य छी । अहाँ केँ देवाक होइछ तँ चार फाड़ि के दैत छियैक । हमरा कोनो आशा नहि छल जे ओम्हा भेटताह । मुदा अहाँकेँ देखवाक छल व हमर मनोरथ पूर्ण भेल ।

हम—की अहाँक नाम सुधा थीक ?

ओ—की अहाँ हमर नाम जनैत छी ?

हम—अहिंक बहिन पुछला पर कहने रहथि—हमरा सभ सँ प्रिय के अछि से सूनू...हमर सुधा । कारण हमर सभहक जीवन एवं स्वभावमे एक ठाम रहने खूब मिलान छल । एवं एखनो वो प्रिय अछिए यद्यपि आव छी दूठाम...

एतबहिमे गाड़ी लहेरियासराय मे आबि कऽ हाँफए लागल, कारण लगातार दौड़ैत - दौड़ैत थाकि गेल छल तेँ कने सुस्ताए लागल !!

देखितहि - देखितहि ओ सज्जन अएलाह एवं हमरा दूनूकेँ गप्प करैत देखि बिना पूर्ण विरामकेँ डिरियाए लगलाह—कुलांगारिणी, कुलटा, तों ककरा सामने घोघ उधाड़लें । के कहाँ पुरुष—

सुधा—भैया.....

सज्जन—चुप रह । भगवान तोरा ओहि हाथ पर बन्ध नहि खसाए देलथुन्ह जाहि हाथें तौं मुँह परसैं सुआ हटबौने । भगवान तोहर ओहि जीकेँ बलाकेँ खसा नहि देलथुन्ह जाहि जी सैं तौं एकरा संगे गण करैत छल । को भगवान कतहु नहि छवि जे एहि कुलटाकेँ लऽ जइतथि ।

सुधा—कने सुनबौ तँ कर भैया.....

सज्जन—भैया कहैत तोरा लाज नहि होइत छौक । गरि जो ओहिसँ पहिने कि तौं ओहि जीभ सँ हमरा लेल भैया शब्दक उच्चारण करैत छै । जाहि जीभ सँ तौं पर-पुरुषक संग वार्ता कएल.....

सुधा—भैया ई कलबीबला पिपाक हण्डी बला जमाए थिकथिन्ह ।

सज्जन—हँ.....

लागल जेना काली माय जेकाँ जी कुचा गेलैन्ह । पुनः दू मिनटक निस्तब्धताक बाद ओ सज्जन बजलाह—ओम्माजी हमरा हार्दिक खेद अछि जे हम अपनेक प्रति एहेन व्यवहार कएल । हम अपनेकेँ नहि चिन्हल तेँ आन बुझल । तखन सुधाक बात...अहाँ तँ जगिते छी जे परदे तँ मिथिलाक आदर्श अछि । एकर जड़ि केहेन गजबूत अछि से तँ कहक प्रयोजने नहि । एतेक भए गेलैक अछि । गौगी सभ आन की ने करैत अछि । मुदा की आइ धरि कतहु देखल अछि जे मिथिलाक स्त्रीगण अपनाकेँ कतहु घोषतर सँ बाहर कएलन्हि अछि ।

हम—हूँ.....!

मोनमे तँ आएल जे कहियन्हि जे तेँ ई दशा मिथिलाक अछि । यदि एतुका पुरुषक संग स्त्रीगणों सर्वगुण सम्पन्न होएबाक प्रयत्न करितथि । तँ की गजाल जे केयो मिथिलाकेँ शिथिला कहबाक साहस करैत । मुदा कहलियन्हि नहि कारण विवाद समाने संग नीक होइछ । तदनन्तर कोनो लिखक योग्य नहि मुदा खूब वार्ता भेल । लोहनामे उतरबाक आग्रह भेल मुदा नहि गेलहुँ । भंगारपुरमे गाड़ी सँ उतरि महावीरजीक मंदिर जाए हुनकासँ प्रार्थना कएल—हे महावीरजी ! अहाँ तँ भगवानक सेवक छी । तेँ अहाँ हमर ई कोशिश कऽ दियऽ । भगवानकेँ कहबैन्हि जे अंधविश्वास एवं मिथ्या आदर्शक जाल फाड़ि मैथिल लोकनिकेँ सुबुद्धि दियन्हु । भरिसक कोशिश पहुँचि गेल तेँ ने आइ किछु वर्षक बाद देखैत छी.....

वैदेही समिति, दरभंगा द्वारा आयोजित

अखिल-भारतीय-मैथिली-साहित्य-सम्मेलन

[द्वितीय अधिवेशन]

All India Maithili Writers' Conference

(Second Session 1958)

एही वर्ष (१९५८) क दुर्गापूजा मध्य हैब निश्चित भेल अछि । गत अधिवेशन (१९५६) क अपूर्व सफलता ककरा नहि विदित अछि । केन्द्रीय ओ राज्य सरकार, बिहार विश्वविद्यालय आदि संस्था द्वारा मान्यता प्राप्त छल । डेलीगेट सभकेँ रेलवे कन्सेशन (एके दिसुक किराया पर दूनू दिसुक यात्रा) प्राप्त छलन्हि ।

एहूवेर सम्पूर्ण सुविधासँ अतिरिक्त विशाल प्रदर्शनी, विशिष्ट मनोरञ्जनक कार्यक्रम आदिक व्यवस्था भै रहल अछि । कथा, कविता, नाटक, संगीत एवं ललित कला, आलोचना, निबन्ध एवं मिथिलाक इतिहास विभागीय सम्मेलन रहत । लोरिक, कीर्त्तनियाँ आदिक नृत्यक विशेष प्रबन्ध हैत ।

पूर्ण सदस्यक चन्दा ५) टाका आइए पठाए सदस्य बनू ।

विशेष विवरणक हेतु मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगाकेँ जोड़ा पोस्टकार्ड लिखि जिज्ञासा करी ।